भारत सरकार

विभागीय गृह पत्रिका

# शेवा कृति

वर्ष : 2024-25 अंक : 6

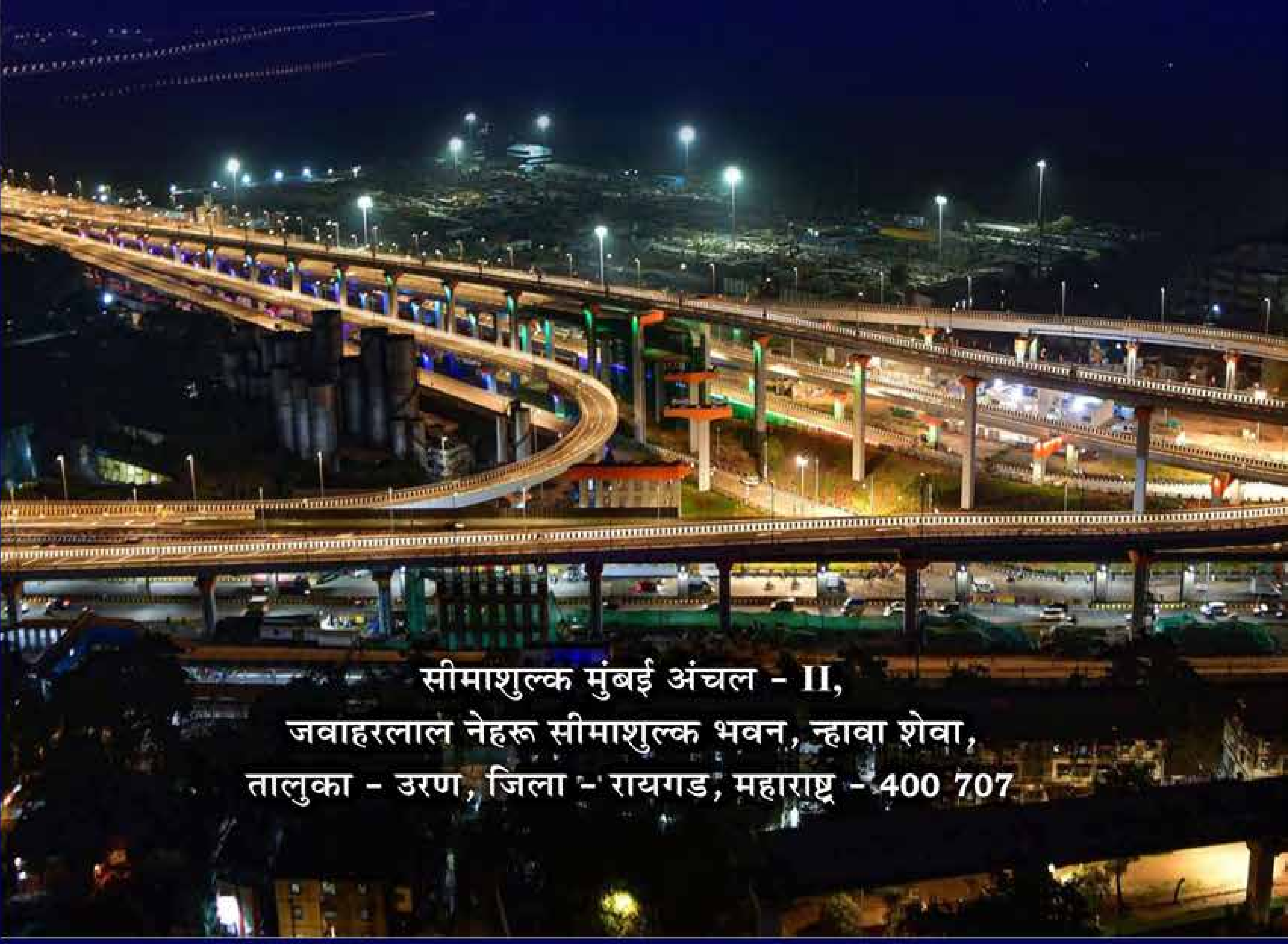

सीमाशुल्क मुंबई अंचल - II,
जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा,
तालुका - उरण, जिला - रायगड, महाराष्ट्र - 400 707

श्री संजय कुमार अग्रवाल, अध्यक्ष, सीबीआईसी एवं सुश्री अरुणा नारायण गुप्ता, जोनल सदस्य, केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमाशुल्क, के साथ सीमाशुल्क मुंबई अंचल I, II एवं III के अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण

विभागीय गृह पत्रिका

# शेवा कृति

वर्ष : 2024-25 अंक : 6


## संरक्षक

**राजेश पाण्डे**

प्रधान मुख्य आयुक्त, सीमाशुल्क मुंबई, अंचल-II

## प्रधान संपादक

**डी. एस. गर्ब्याल**

आयुक्त

## संपादक मण्डल

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **दीपक कुमार गुप्ता** | **सोनल बजाज** | **संजीव कुमार सिंह** | **अश्विनी कुमार** | **वी. वी. पंडित** |
| आयुक्त | आयुक्त | आयुक्त | आयुक्त | आयुक्त |

**शोकेन्द्र कुमार**

अपर आयुक्त

**सहयोग : टीना छाबड़ा, रुचि मिश्रा, शाश्वत सिंह, विकास कुमार, एल्डन डिसूज़ा, रूपेश एस सक्सेना**


पत्रिका में प्रकाशित विचारों से संपादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

मुख्य पृष्ठ में देश के सबसे लंबे समुद्री पुल 'अटल सेतु' का विहंगम दृश्य है, जो शिवड़ी, मुंबई से आरंभ होकर न्हावा शेवा, उरण में समाप्त होता है। (फोटो : साभार गूगल)

# अनुक्रम


| | | | |
|---|---|---|---|
| ❖ | चेयरमैन का दौरा | रिपोर्ट | 10 |
| ❖ | नासेन महानिदेशक व नेपाली महानिधिमंडल का दौरा | रिपोर्ट | 11 |
| ❖ | 15 अगस्त 2024 की झलकियां | | 12 |
| ❖ | एफएटीएफ मूल्यांकन टीम का दौरा | रिपोर्ट | 13-14 |
| ❖ | राजभाषा हिन्दी एवं कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी आवश्यक बातें | पौर्णिमा एन सालवे | 15-17 |
| ❖ | यूँ ही नहीं मिली आज़ादी | शोकेन्द्र कुमार | 18 |
| ❖ | केन्द्रीय आसूचना विभाग की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ 2023-24 | रिपोर्ट | 19-20 |
| ❖ | महत्वपूर्ण राजस्व आँकड़े | रिपोर्ट | 21 |
| ❖ | ए आई क्रांति : भारत और दुनिया का भविष्य | मोहम्मद शादाब | 22-23 |
| ❖ | कार्यस्थल में मानसिक स्वास्थ्य- भारतीय सीमाशुल्क अधिकारियों के लिए एक प्राथमिकता | विशाल मल्होत्रा | 24-25 |
| ❖ | वास्तु शास्त्र विज्ञान | संगीता अधिकारी | 26 |
| ❖ | गणतंत्र दिवस की झलकियां | | 27 |
| ❖ | 'द ग्रेट एमू वॉर'- एक रोचक घटना | परीक्षित तिवाड़ी | 28 |
| ❖ | सिर्फ एक आस | गौरव कुमार | 29-30 |
| ❖ | क्या मैं एक अच्छा बॉस हूँ........ ! | रूपेश एस सक्सेना | 31-32 |
| ❖ | सतर्कता जागरूकता सप्ताह | रिपोर्ट | 33-34 |
| ❖ | भ्रष्टाचार का विरोध करें, राष्ट्र के प्रति समर्पित रहें | राम कुमार निशाद | 35-36 |
| ❖ | योग दिवस | रिपोर्ट | 37 |
| ❖ | अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस एवं गरबा समारोह | रिपोर्ट | 38 |
| ❖ | उपलब्धियाँ | | 39-40 |
| ❖ | नज़्म | मोहम्मद शादाब | 41 |
| ❖ | मेरा गाँव कुछ कहता है / बाबरी | श्रेया आर. सक्सेना/लक्ष्मी कुमारी | 42 |
| ❖ | जज़्बा और जज़्बात | निखिल गुप्ता | 43 |
| ❖ | ग़ज़ल | मुकेश कुमार मिश्रा | 44 |
| ❖ | मातृभाषा हिन्दी | संगीता अधिकारी | 45 |
| ❖ | तुम लक्ष्य की तलाश हो | धनंजय मौर्य | 46 |
| ❖ | तुम बन जाओ सीते... | प्रद्युम्न मैथिल | 47 |
| ❖ | नशा मुक्त भारत अभियान | रिपोर्ट | 48-49 |
| ❖ | स्वच्छता पखवाड़ा-2023 | रिपोर्ट | 50-51 |
| ❖ | पुरस्कार - एक संस्मरण | रुचि मिश्रा | 52-53 |
| ❖ | निबंध प्रतियोगिता | रवि यादव | 54-55 |
| ❖ | बच्चों का कोना | | 56-57 |

सत्यमेव जयते

प्रधान मुख्य सीमाशुल्क आयुक्त, मुंबई अंचल-II
Pr. Chief Commissioner of Customs,
Mumbai Customs Zone-II
जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन
Jawaharlal Nehru Custom House
पोस्टः शेवा, तालुकाः उरण,जिला रायगढ़, महाराष्ट्र - 400707
Post: Sheva, Taluka: Uran,
District: Raigad, Maharashtra - 400707

राजेश पाण्डे
(प्रधान मुख्य आयुक्त, सीमाशुल्क)

## संरक्षक की कलम से .....

यह हर्ष का विषय हैं कि विगत 06 वर्षों से हिन्दी पत्रिका "शेवा कृति" का सतत प्रकाशन किया जा रहा है।

अपने विशाल विन्यास को समाहित किए हुए राजस्व संग्रहण की क्षमता में अग्रणीय यह सीमाशुल्क भवन, गृह पत्रिका "शेवा कृति" के प्रकाशन के माध्यम से अपनी रचनात्मकता प्रस्तुत करने को सदा तत्पर है। सीमाशुल्क मुंबई-II के अंचल में जहाँ एक ओर बड़ी संख्या में कार्यरत हमारे सहकर्मी विभिन्न प्रकार के सीमाशुल्क संबंधी कार्यों और दायित्वों का निर्वहन करते हैं। वहीं दूसरी ओर "शेवा कृति" के माध्यम से ये सभी साझा प्रयास करते हुए पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए एक जुट हो जाते हैं और हमारी राजभाषा हिन्दी उनकी रचनात्मकता एवं अभिव्यक्ति के मध्य एक सेतु का कार्य करती है।

हिन्दी का प्रयोग राष्ट्रीय एकता को भी सुदृढ़ करता है। सीमाशुल्क भवन बहुभाषी कार्यस्थल है और हिन्दी हमें जोड़ने का कार्य भी करती है।

"शेवा कृति" के इस छठे अंक के प्रकाशन से प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रुप से जुड़े सभी अधिकारियों को मैं शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ और सभी से राजभाषा हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार के लिए अपने-अपने स्तर पर योगदान देने की अपील करता हूँ।

राजेश पाण्डे

(राजेश पाण्डे)

सत्यमेव जयते

**भारत सरकार**
**GOVERNMENT OF INDIA**
**वित्त मंत्रालय**
**MINISTRY OF FINANCE**
**राजस्व विभाग**
**DEPARTMENT OF REVENUE**
**केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमाशुल्क बोर्ड**
**CENTRAL BOARD OF INDIRECT TAXES & CUSTOMS**
**सीमाशुल्क मुंबई अंचल- II**
**MUMBAI CUSTOMS ZONE-II**

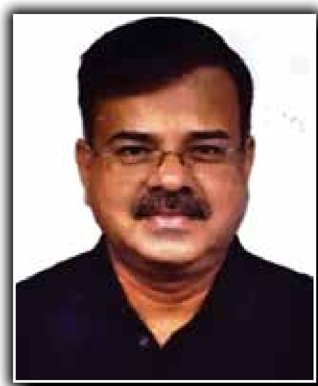

**दीपक कुमार गुप्ता**
(आयुक्त, सीमाशुल्क)

किसी भी राष्ट्र की पहचान मुख्यतः तीन बातों से होती है, भू-भाग, जनसंख्या एवं उसकी भाषा और किसी भी राष्ट्र की मुख्य भाषा वही हो सकती है, जिसका अपने देश की संस्कृति, सभ्यता, साहित्य एवं परिवेश से गहरा संबंध हो और भाग्यवश हमारी अपनी 'हिन्दी' में यह सभी विशेषताएँ मौजूद हैं। हिन्दी भाषा ने देश की अन्य समृद्ध भाषाओं से एक अभूतपूर्व तारतम्यता बनाते हुए भारत संघ की राजभाषा के रूप में अपने को स्थापित किया है।

सरकारी काम-काज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के भरसक प्रयास किए जा रहे हैं और समय-समय पर हमें इस संबंध में सरकार के निर्देश भी प्राप्त होते रहते हैं। हम जितना अधिक हिन्दी का प्रयोग करेंगे हमारा संवाद उतना ही सरल, सुस्पष्ट और प्रभावशाली होगा।

आर्थिक गतिविधियों के केन्द्र के रूप में पहचान रखने वाले इस सीमाशुल्क अंचल में हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन एक सुखद अनुभूति है। 'शेवा कृति' का सतत रूप से छठी बार प्रकाशन किया जा रहा है और इससे हमें इस प्रतिष्ठान की गतिविधियों का भी पता चलता रहता है।

मैं 'शेवा कृति' के प्रकाशन से जुड़े सभी सहयोगियों को उनके योगदान हेतु धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

दीपक कु. गुप्ता

**(दीपक कुमार गुप्ता)**

सत्यमेव जयते

**भारत सरकार**
**GOVERNMENT OF INDIA**
**वित्त मंत्रालय**
**MINISTRY OF FINANCE**
**राजस्व विभाग**
**DEPARTMENT OF REVENUE**
**केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमाशुल्क बोर्ड**
**CENTRAL BOARD OF INDIRECT TAXES & CUSTOMS**
**सीमाशुल्क मुंबई अंचल- II**
**MUMBAI CUSTOMS ZONE-II**

**सोनल बजाज**
(आयुक्त, सीमाशुल्क)

जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क आयुक्तालय, मुंबई अंचल-II द्वारा हिन्दी पत्रिका 'शेवा कृति' के छठे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। आर्थिक गतिविधियों के गढ़ के रूप में पहचाने जाने वाले इस सीमाशुल्क भवन में हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन अपने आप में विशिष्ट प्रयास है। पत्रिका के माध्यम से राजस्व उगाही के साथ-साथ विभिन्न गतिविधियों और अधिकारियों की रचनात्मक एवं सृजनात्मक क्षमताओं की भी झलकियाँ देखने को मिलती है।

मैंने देखा है कि पत्रिका में सभी गतिविधियों को क्रमबद्ध तरीके से प्रदर्शित किया गया है, इससे आने वाले नए अधिकारियों को भी अपने कार्यस्थल की सभी सूचनाएं प्राप्त होंगी।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में 'शेवा कृति' एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती रही है और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी करती रहेगी।

मैं 'शेवा कृति' के निरंतर प्रकाशन की कामना करता हूँ।

**(सोनल बजाज)**

सत्यमेव जयते

**भारत सरकार**
**GOVERNMENT OF INDIA**
**वित्त मंत्रालय**
**MINISTRY OF FINANCE**
**राजस्व विभाग**
**DEPARTMENT OF REVENUE**
**केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमाशुल्क बोर्ड**
**CENTRAL BOARD OF INDIRECT TAXES & CUSTOMS**
**सीमाशुल्क मुंबई अंचल- II**
**MUMBAI CUSTOMS ZONE-II**

**संजीव कुमार सिंह**
**(आयुक्त, सीमाशुल्क)**

भारत जैसे बहुभाषी देश में हिन्दी सभी को एक सूत्र में पिरोने का कार्य कर रही है। हिन्दी आज लगभग चौवालीस प्रतिशत भारतीयों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है और सही अर्थ में यह जनभाषा कहलाने की अधिकारिणी है। सरकारी काम-काज में भी इसका अधिक से अधिक प्रयोग अपेक्षित है। यह एक संवैधानिक आवश्यकता ही नहीं, अपितु इसमें हमारी राष्ट्र प्रेम की भावना भी निहित है।

उपरोक्त के संदर्भ में 'शेवा कृति' का छठा संस्करण अपनी पूर्ण साज-सज्जा के साथ आप लोगों के समक्ष प्रस्तुत है, जिसमें अधिकारियों की मुक्त अभिव्यक्तियों की झलक दिखाई देती है।

पत्रिका से जुड़े सभी अधिकारियों को साधुवाद। 'शेवा कृति' के सतत प्रकाशन की कामना के साथ ....

**(संजीव कुमार सिंह)**

सत्यमेव जयते

**भारत सरकार**
**GOVERNMENT OF INDIA**
**वित्त मंत्रालय**
**MINISTRY OF FINANCE**
**राजस्व विभाग**
**DEPARTMENT OF REVENUE**
**केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमाशुल्क बोर्ड**
**CENTRAL BOARD OF INDIRECT TAXES & CUSTOMS**
**सीमाशुल्क मुंबई अंचल- II**
**MUMBAI CUSTOMS ZONE-II**

**अश्विनी कुमार**
**(आयुक्त, सीमाशुल्क)**

अंचल की राजभाषा पत्रिका 'शेवा कृति' का प्रकाशन करते हुए अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। पत्रिका में अधिकारियों की लेखनी के माध्यम से दिया गया योगदान सराहनीय है। रचनाएँ, अभिव्यक्ति की शक्ति के साथ-साथ भाषा में पकड़ को भी मजबूत बनाती है। निःसंदेह 'शेवा कृति' ने कार्यालय में हिन्दी भाषा के प्रयोग में सतत वृद्धि एवं हिन्दी के प्रति सकारात्मक वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

यद्यपि हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन इस सीमाशुल्क अंचल में राजस्व गतिविधियों के मध्य राजभाषा हिन्दी को समाहित करने की एक छोटी-सी पहल है किन्तु इससे अधिकारियों के मध्य सरकारी कार्यों के प्रयोग का संदेश भी जाएगा और हिन्दी के प्रचार हेतु सरकार के प्रयासों को बल मिलेगा।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आगे भी यह क्रम जारी रहेगा। मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन में योगदान हेतु समस्त रचनाकारों व संपादकों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

**(अश्विनी कुमार)**

सत्यमेव जयते

**भारत सरकार**
**GOVERNMENT OF INDIA**
**वित्त मंत्रालय**
**MINISTRY OF FINANCE**
**राजस्व विभाग**
**DEPARTMENT OF REVENUE**
**केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमाशुल्क बोर्ड**
**CENTRAL BOARD OF INDIRECT TAXES & CUSTOMS**
**सीमाशुल्क मुंबई अंचल- II**
**MUMBAI CUSTOMS ZONE-II**

**वी. वी. पंडित**
(आयुक्त, सीमाशुल्क)

जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा भारत के शीर्षस्थ कर संग्राहक कार्यालयों में से एक है और विविध राजस्व गतिविधियों का केन्द्र है। ऐसे परिवेश में हिन्दी गृह-पत्रिका 'शेवा कृति' का प्रकाशन एक सुखद अनुभूति है।

यह प्रदर्शित करता है कि इस अंचल में अधिकारी सरकारी काम-काज के अतिरिक्त हिन्दी के साथ रचनात्मकता, पठन-पाठन एवं लेखन में रुचि रखते हैं, जो कि पत्रिका में दिखाई पड़ती है। उनकी यह रुचि राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सहायक होगी। हमारे इस विशाल स्वरूप वाले सीमाशुल्क अंचल में प्रतिवर्ष बड़ी तादात में नव नियुक्त युवा अधिकारी सरकारी सेवा में आते हैं। उनके मन-मस्तिष्क में भी हिन्दी पत्रिकाओं के माध्यम से हिन्दी के प्रति जागरूकता जागेगी। मैं आशा करता हूँ कि 'शेवा कृति' से अधिक से अधिक अधिकारी जुड़ें और अपनी कृतियों से अपना योगदान दें।

मैं पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों को शुभकामनाएँ देता हूँ।

**(वी. वी. पंडित)**

सत्यमेव जयते

**भारत सरकार**
**GOVERNMENT OF INDIA**
**वित्त मंत्रालय**
**MINISTRY OF FINANCE**
**राजस्व विभाग**
**DEPARTMENT OF REVENUE**
**केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमाशुल्क बोर्ड**
**CENTRAL BOARD OF INDIRECT TAXES & CUSTOMS**
**सीमाशुल्क मुंबई अंचल- II**
**MUMBAI CUSTOMS ZONE-II**

**डी. एस. गर्ब्याल**
**(आयुक्त, सीमाशुल्क)**

## संपादक की कलम से .....

सीमाशुल्क मुंबई अंचल-II की हिन्दी विभागीय पत्रिका 'शेवा कृति' के संपादक की भूमिका निभाते हुए यह मेरा तीसरा अवसर है और आप सभी को इसके छठे संस्करण को सौंपते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है।

अपने सहयोगियों के साथ मिलकर राजस्व संग्रहण के लक्ष्यों को प्राप्त करने के प्रयासों के बीच राजभाषा गतिविधियाँ एक सुकून का अनुभव प्रदान करती हैं। जैसा कि हमें विदित है कि संविधान ने हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया है ताकि शासन का कार्य हिन्दी में हो। इसके साथ ही संविधान के अनुच्छेद 351 के अनुसार हिन्दी के प्रचार-प्रसार की जिम्मेदारी केन्द्र सरकार की है।

हम सरकारी आदेशों के अनुसार प्रोत्साहन योजनाओं, कार्यशालाओं, राजभाषा निरीक्षण, राजभाषा बैठकों, हिन्दी पखवाड़ा समारोह एवं प्रशिक्षणों के माध्यम से हिन्दी के प्रचार-प्रसार का प्रयास करते हैं। इन प्रयासों के साथ-साथ कार्यालय में यदि हिन्दी को हम 'व्यवहार' की भाषा बना लें तो हिन्दी शीघ्र ही सम्पूर्ण सरकारी काम-काज की भाषा भी बन जाएगी क्योंकि उसमें सरलता एवं स्पष्टता भी शामिल है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी ने कहा था-

*''राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना*
*देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है।''*

'शेवा कृति' के इस अंक में सीमाशुल्क भवन की विभिन्न गतिविधियों, विशिष्ट अतिथियों के आगमन, राजस्व संबंधी आँकड़े, अधिकारियों की हिन्दी की साहित्यिक रचनाओं का समावेश किया गया है। मुझे आशा है कि राजभाषा प्रसार के प्रयोजन में यह अंक सफल रहेगा। यह अंक कैसा रहा, इसके मूल्यांकन का उत्तरदायित्व मैं अपने पाठकों को सौंपता हूँ, आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा में ....

**(डी. एस. गर्ब्याल)**

# चेयरमैन का दौरा

श्री संजय कुमार अग्रवाल, अध्यक्ष, सीबीआईसी एवं सुश्री अरुणा नारायण गुप्ता, जोनल सदस्य, केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमाशुल्क, ने दिनांक 10.05.2024 को जेएनसीएच, न्हावा शेवा का दौरा किया। इस दौरे में उन्होंने व्यापारिक प्रतिनिधियों के साथ बातचीत की एवं मुंबई सीमाशुल्क अधिकारियों के साथ संवाद किया।

व्यापारिक प्रतिनिधियों से मिलते हुए माननीय अध्यक्ष महोदय।

वृक्षारोपण करते हुए श्री संजय कुमार अग्रवाल एवं सुश्री अरुणा नारायण गुप्ता।

उच्च अधिकारियों के साथ चर्चा करते हुए श्री संजय कुमार अग्रवाल, अध्यक्ष, सीबीआईसी एवं सुश्री अरुणा नारायण गुप्ता, सदस्य, सीबीआईसी

# नेपाली प्रतिनिधि मण्डल का दौरा

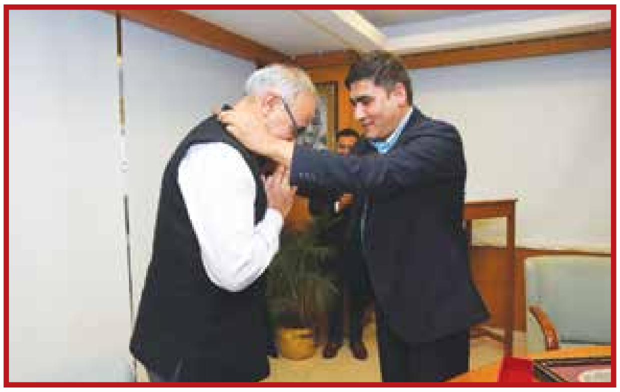

# नासेन महानिदेशक का दौरा

डॉ. के. एन. राघव, महानिदेशक,
नासेन का जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा का दौरा

**78वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर राजेश पाण्डे, प्रधान मुख्य आयुक्त महोदय द्वारा ध्वजारोहण एवं अधिकारियों को संबोधित करते हुए।**

# वित्तीय कार्रवाई कार्यदल एफ.ए.टी.एफ.
## FINANCIAL ACTION TASK FORCE (FATF)

वित्तीय कार्रवाई कार्यदल (Financial Action Task Force) के द्वारा भारतीय सीमाशुल्क का एक समग्र मूल्यांकन (Overall evaluation) दिनांक 20.10.2023 को किया गया, जिसकी मेजबानी सीमाशुल्क मुंबई अंचल-II, जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा ने की। ज्ञात हो कि भारत वर्ष 2010 से इसका सदस्य देश है।

एफ.ए.टी.एफ. एक वैश्विक सरकारी संस्था है, जो विश्वव्यापी काले धन को वैध बनाने को रोकने से संबंधित नीतियों का निर्माण करने के लिए वर्ष 1989 में पेरिस, फ्रांस में स्थापित की गई थी। पहले यह संस्था काले धन को वैध बनाने अर्थात् मनी लान्डरिंग को रोकने का कार्य करती थी, किन्तु बाद में वर्ष 2001 से उन्होंने अपनी सेवाओं का दायरा बढ़ाया और आतंकवाद को धन मुहैया कराने के विरुद्ध नीतियाँ बनाना भी प्रारंभ कर दिया।

एफ.ए.टी.एफ. ने अपने निरीक्षण कार्यक्रम के दौरान निरीक्षण दल ने जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट (जेएनपीटी), सीमाशुल्क स्कैनिंग डिवीजन और जेएनसीएच के भीतर अन्य प्रमुख संरचनाओं सहित विभिन्न जेएनसीएच परिचालनों की गहन समीक्षा की। इस निरीक्षण के माध्यम से एफ.ए.टी.एफ. के द्वारा यह मूल्यांकन किया गया कि जेएनसीएच न्हावा शेवा के द्वारा मनी लॉन्ड्रिंग और आतंकी वित्तपोषण से निपटने के लिए अंतरराष्ट्रीय मानदंडों और एफ.ए.टी.एफ. दिशा निर्देशों के अनुरूप कार्य किया जा रहा है।

**एफ.ए.टी.एफ. प्रतिनिधि मण्डल का स्वागत करते माननीय प्रधान मुख्य आयुक्त, सीमाशुल्क**

भारत ने 2023-24 के दौरान एफ.ए.टी.एफ. द्वारा आयोजित पारस्परिक मूल्यांकन में उत्कृष्ट परिणाम हासिल किया। भारत को इस पारस्परिक मूल्यांकन रिपोर्ट में 'रेगुलर फालो अप' श्रेणी में रखा गया, जो कि एफ.ए.टी.एफ. मानकों के अनुपालन के उच्च स्तर का प्रतीक है और इसे सिर्फ 04 जी20 देश ही साझा करते हैं। भारत के लिए यह दर्जा हासिल करना वित्तीय अपराधों के खिलाफ भारतीय वित्त प्रणाली को मजबूत करने के प्रयासों के लिए एक मील का पत्थर साबित होगा एवं मनी-लॉन्ड्रिंग और आतंकवाद विरोधी वित्तपोषण उपायों को बनाए रखने की भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

दिनांक 20.10.2023 के एफ.ए.टी.एफ. के मूल्यांकन के दौरान जेएनसीएच न्हावा शेवा ने यह संदेश दिया है कि अपने बुनियादी वित्तीय आसूचना सिस्टम को और मजबूत करने और वैश्विक वित्तीय अपराधों से निपटने के लिए अंतरराष्ट्रीय भागीदारों के साथ सहयोग बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है।

**सीमाशुल्क मुंबई अंचल II के अधिकारियों के साथ  एफ. ए. टी. एफ. अधिकारीगण**

एफ.ए.टी.एफ. के सकारात्मक मूल्यांकन से भारत की वित्तीय प्रणाली में विश्वास बढ़ने, अधिक विदेशी निवेश आकर्षित होने और सुरक्षित आर्थिक माहौल को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।

❖❃❖

# राजभाषा हिन्दी एवं कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी आवश्यक बातें

पौर्णिमा एन सालवे
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

''राजभाषा सरल, अधिकांश जनता द्वारा समझे जाने वाली, राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक व्यवहार को बखूबी चलाने में सक्षम होनी चाहिए।''- राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी

महात्मा गाँधीजी के उपरोक्त कथन में बताए गए गुणों की कसौटी पर हिन्दी भाषा खरी उतरती है। हिन्दी विश्व की सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में चीनी, स्पैनिश के बाद तीसरे नंबर की भाषा है। संपूर्ण विश्व में लगभग 615 मिलियन लोग हिन्दी बोलते एवं समझते हैं। हिन्दी भाषा सरल एवं आसानी से समझी जाने वाली भाषा है। इसका शब्द भंडार काफी समृद्ध है। हिन्दी में नए-नए शब्दों के सृजन की भी क्षमता है।

हिन्दी भाषा के इन्ही गुणों को ध्यान में रखते हुए 14 सितंबर, 1949 को हिन्दी को राजभाषा का सम्मान प्रदान हुआ। यह निर्णय भी दिया गया कि 26 जनवरी 1950 से 15 वर्षों तक अंग्रेजी का प्रयोग सरकारी कार्यों में उसी प्रकार होता रहेगा, जैसा हो रहा है, परंतु 26 जनवरी 1965 के पश्चात समस्त कार्य केवल हिन्दी में ही होंगे। हिन्दी को राजभाषा के रूप में संविधान की धारा 343(1) के द्वारा घोषित किया गया था। राजभाषा से संबंधित प्रावधान संविधान की धारा 343 से धारा 352 में वर्णित है।

राजभाषा के रूप में अपनाए जाने के 76 वर्ष बाद आज भी राजभाषा हिन्दी अपना वह स्थान पाने से वंचित रह गई है, जिसकी वह हकदार है। आज भी अधिकतर सरकारी कामकाज अंग्रेजी में ही किए जाते हैं। हिन्दी प्रयोग के आधार पर भारत को तीन क्षेत्रों में बाँटा गया है। ''क'' क्षेत्र में उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, हरियाणा, राजस्थान, बिहार, हिमाचल प्रदेश, झारखण्ड, मध्य प्रदेश, अण्डमान और निकोबार द्विपसमूह, दिल्ली संघ आदि राज्य आते हैं, जो हिन्दी भाषी हैं। ''ख'' क्षेत्र में गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब तथा चंडीगढ़, दमन, दीव तथा दादर और नगर हवेली संघ क्षेत्र आदि राज्य आते हैं और ''ग'' क्षेत्र में अहिन्दीभाषी क्षेत्र जैसे कि केरल, तमिलनाडू, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, असम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैण्ड, मेघालय, मणिपुर, त्रिपुरा, मिजोरम, तेलंगाना, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश आदि राज्य आते हैं। इस वर्गीकरण के अनुसार जवाहर लाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, मुंबई सीमाशुल्क अंचल-II कार्यालय 'क्षेत्र ख' के अंतर्गत आता है। राजभाषा विभाग द्वारा हर वर्ष जारी किए जाने वाले वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार- उपरोक्त क्षेत्रों के लिए राजभाषा कार्यान्वयन हेतु लक्ष्य की सुनिश्चिती की गई है, जो निम्न प्रकार है-

## हिन्दी के प्रयोग के लिए वर्ष 2024-25 का वार्षिक कार्यक्रम

| क्र. सं. | कार्य विवरण | 'क' क्षेत्र | 'ख' क्षेत्र | 'ग' क्षेत्र |
|---|---|---|---|---|
| 1. | हिन्दी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित) | 1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100%<br>2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100%<br>3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65%<br>4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र को 100% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति | 1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90%<br>2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90%<br>3. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55%<br>4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र को 100% के राज्य/संघ राज्यक्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति | 1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55%<br>2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55%<br>3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55%<br>4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र को 55% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 2. | हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिन्दी में दिया जाना | 100% | 100% | 100% |
| 3. | हिन्दी में टिप्पण | 75% | 50% | 30% |
| 4. | हिन्दी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम | 70% | 60% | 30% |
| 5. | हिन्दी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती | 80% | 70% | 40% |
| 6. | हिन्दी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा) | 65% | 55% | 30% |
| 7. | हिन्दी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपी) | 100% | 100% | 100% |
| 8. | द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना | 100% | 100% | 100% |
| 9. | जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिन्दी ई-पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पेनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिन्दी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिन्दी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय। | 50% | 50% | 50% |
| 10. | हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों, जिनमें कम्प्यूटर भी शामिल है, की खरीद | 100% | 100% | 100% |
| 11. | वेबसाइट द्विभाषी हो | 100% | 100% | 100% |
| 12. | नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाएं। | 100% | 100% | 100% |
| 13. | (i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत) | 25% (न्यूनतम) | 25% (न्यूनतम) | 25% (न्यूनतम) |
| | (ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण | 25% (न्यूनतम) | 25% (न्यूनतम) | 25% (न्यूनतम) |
| | (iii) विदेश में स्थित केन्द्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपकरणों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण | | वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण | |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 14. | राजभाषा संबंधी बैठकों | | | |
| | (क) हिन्दी सलाहकार समिति | | वर्ष में 2 बैठकें | |
| | (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति | | वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) | |
| | (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति | | वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक) | |
| 15. | कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिन्दी अनुवाद | 100% | 100% | 100% |
| 16. | मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/ बैंकों/ उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिन्दी में हो। | 40% | 30% | 20% |
| | | | | (न्यूनतम अनुभाग) |
| | | | | सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, 'क' क्षेत्र में कुल कार्य का 40% 'ख' क्षेत्र में 25% और 'ग' क्षेत्र में 15% कार्य हिन्दी में किया जाए। |

वार्षिक कार्यक्रम का अध्ययन करने के उपरांत हमारे कार्यालय के लिए सुनिश्चित किए गए लक्ष्य से हम अभी भी काफी दूर हैं। भविष्य में हमारे कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन को प्रभावी करने के लिए कई छोटी-छोटी किंतु अत्यावश्यक बातों का ध्यान रखना होगा, जैसे-

- ❖ कंप्यूटर पर हिन्दी टंकण की सुविधा सुनिश्चित करना, जिसमें युनिकोड ऐक्टिव करते हुए उसमें हिन्दी की फोनेटिक टायपिंग की सुविधा डाउनलोड करें, जिससे हिन्दी टंकण सुविधाजनक होगा।
- ❖ अनुभाग में स्वतंत्र रूप से हिन्दी पत्रों हेतु एक रजिस्टर तैयार करना, जिसमें आवक और जावक की प्रविष्टि करें, जिससे हिन्दी तिमाही प्रगति रिपोर्ट बनाने में आसानी होगी।
- ❖ ई-ऑफिस में नई फाइल का शीर्षक द्विभाषी रूप में लिखें।
- ❖ नेमि प्रवृति (Routine Matter) टिप्पणियों, पत्रों, आदेशों आदि की पहचान करें। प्राप्त सामग्री को हिन्दी अनुभाग को द्विभाषी बनाने हेतु सौंपें। भविष्य में द्विभाषी प्रारूपों टिप्पणियों का उपयोग अनिवार्य रूप से करें।
- ❖ टिप्पणी लिखते समय सरल एवं सुबोध हिन्दी का प्रयोग करें। यदि एक बार कोई टिप्पणी हिन्दी में लिख दी जाएगी तो आगे के अधिकारी भी उस पर हिन्दी में ही अभ्युक्ति (Remarks) लिखेंगे। इस प्रकार संपूर्ण टिप्पणी हिन्दी में ही लिखी जाएगी।
- ❖ प्रपत्रों पर हस्ताक्षर आवश्यक रूप से हिन्दी में करें।
- ❖ राजभाषा हिन्दी में प्रवीण अधिकारियों को अधिकाधिक फाइल संबंधी कार्य सौंपे, जिससे मूल रूप से मसौदा/प्रपत्र का निर्माण हिन्दी में हो सके। इसके लिए राजभाषा विभाग द्वारा प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत शामिल होकर पुरस्कार प्राप्त करने का अवसर प्राप्त करें।
- ❖ राजभाषा संबंधी सभी गतिविधियों जैसे- कार्यशाला, पखवाड़ा, राजभाषा प्रतियोगिताएँ, व्याख्यान आदि में सभी कर्मचारी एवं अधिकारीगण भाग लें।
- ❖ कार्यालय में अंग्रेजी न बोल पाने या लिख पाने की हिचकिचाहट पर काबू करने के लिए हिन्दी भाषा में आत्मविश्वासपूर्ण अभिव्यक्ति/दस्तावेज निर्माण करें। साथ ही हिन्दी अनुभाग से रिवार्ड प्राप्त करें।
- ❖ द्विभाषी फार्मों, निर्धारित प्रारूपों का अधिक प्रयोग करें।

इस तरह बिना किसी विशेष तैयारी के और ऊपर दिए गए सरल सुझावों के माध्यम से दैनिक कार्यों में यथावयश्क परिवर्तन कर आप अपने कार्यों में राजभाषा का उपयोग कर राजभाषा हिन्दी को एक सम्मानजनक स्थिति में पहुंचा सकेंगे।

❖ ❖ ❖

कविता

# यूँ ही नहीं मिली आज़ादी

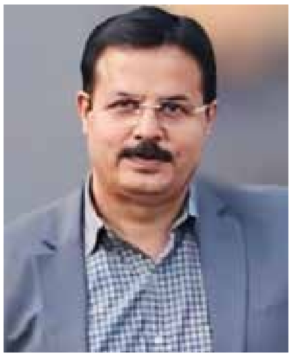

शोकेन्द्र कुमार
अपर आयुक्त, सीमाशुल्क

(1)
यूँ ही नहीं मिली आज़ादी
है दाम चुकाये वीरों ने,
कुछ हँस कर चढ़े फाँसी पर,
कुछ ने जख्म सहे शमशीरों के,
यूँ ही नहीं मिली आज़ादी
है दाम चुकाये वीरों ने।

(2)
जो शुरू हुई सन् सत्तावन में,
सन् सैंतालीस तक शुरू रही,
मारे गए अंग्रेज कई
वीरों के रक्त की नदी बही,
मजबूत किया संकल्प था उनका
भारत मत के वीरों ने,
यूँ ही नहीं मिली आज़ादी
है दाम चुकाये वीरों ने।

(3)
देश की रक्षा की खातिर
थी रानी ने तलवार उठाई,
पीठ पर बांध बालक को
पर जंग में न थी पीठ दिखाई,
कुछ ऐसे हुए शहीद जैसे त्यागे हैं
प्राण रणधीरों ने,
यूँ ही नहीं मिली आज़ादी
है दाम चुकाये वीरों ने।

(4)
जोश ही जोश भरा था लहू में
मजबूत शरीर बनाया था,
हालत पतली कर दी थी
अंग्रेजों को खूब डराया था,
आजाद वो था आजाद रहा
न पकड़ा गया जंजीरों में,
यूँ ही नहीं मिली आज़ादी
है दाम चुकाये वीरों ने।

(5)
है गर्व मुझे उन वीरों पर
भारत माँ के जो बेटे हैं,
हो जान से प्यारा वतन हमें,
शिक्षा इस बात की देते हैं।
इस आज़ादी की खातिर ही
दी है जान देश के हीरो ने,
यूँ ही नहीं मिली आज़ादी
है दाम चुकाये वीरों ने।

(6)
कुछ हँस कर चढ़े फाँसी पर
कुछ ने जख्म सहे शमशीरों के,
यूँ ही नहीं मिली आज़ादी
है दाम चुकाये वीरों ने।

(7)
उधम सिंह और मदन लाल ने खूब नाम कमाया था
घुस कर लंदन में अंग्रेजों को उनका अंजाम दिखाया था,
यूँ मातृभूमि से प्यार किया
जैसे भगवान से किया फकीरों ने,
यूँ ही नहीं मिली आज़ादी
है दाम चुकाये वीरों ने।

(8)
राजगुरु, सुखदेव, भगत सिंह हँस कर
फाँसी पर जब झूले,
बजा बिगुल फिर आज़ादी का
हृदय सबके थे फूले,
लोगो के खौंफ से डर कर ही
इन्हें जलाया सतलुज के तीरों पे,
यूँ ही नहीं मिली आज़ादी
है दाम चुकाये वीरों ने।

❖❃❖

# केन्द्रीय आसूचना विभाग की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ : वर्ष 2023-24

### केस : फाइटोसैनिटरी प्रमाणपत्र का दुरुपयोग करते हुए कीवी के आयात

बहुत से आयातकों के द्वारा सीटीएच-08105000 के अंतर्गत ताजे कीवी के आयात करने के लिए संयुक्त अरब अमीरात से चोरी छुपे फाइटोसैनिटरी प्रमाणपत्र प्राप्त करने के लिए चिली अथॉरिटी से प्राप्त फाइटोसैनिटरी प्रमाणपत्र का बार-बार प्रयोग में लाया जा रहा था।

**तरीका :** अप्रैल-मई 2023 के महीनों में चिली सरकार द्वारा जारी किए गए फाइटोसैनिटरी प्रमाणपत्र का उपयोग निर्यातकों द्वारा संयुक्त अरब अमीरात में मूल देश चिली को घोषित करके भारत में कीवी का निर्यात करने के लिए किया गया था।

ज्ञात हुआ कि कीवी फल की खेप ईरान मूल की है और इसे आयात की विशेष शर्तों, प्लांट क्वॉरन्टीन आदेश 2002 का उल्लंघन करके आयात किया गया है।

जांच के दौरान 10 आयातकों से लाइव कंसाइनमेंट के कुल रुपये 4,99,66,353/- की 17 बिल ऑफ एंट्री का पता चला, जिस पर 1,64,88,896/- रुपये का सीमाशुल्क लागू हो रहा था।

दिनांक 01.01.2023 से 31.12.2023 तक कीवी फलों के पिछले आयात की जांच करने पर यह पाया गया कि कई आयातक गैर-प्रासंगिक फाइटोसैनिटरी प्रमाणपत्र अपलोड करने के तरीके का बार-बार प्रयोग कर रहे थे और दूसरे कंसाइनमेंट में भी यही तरीका अपनाया जा रहा था। उस अवधि में ताजे कीवी के आयात हेतु 34 आयातकों के द्वारा 111 बिल ऑफ इंट्री दर्ज की गईं, जिनका मूल्य रुपये 36,36,53,158/- था और जिसमें रुपये 12,03,29,222/- के सीमाशुल्क का निर्धारण हो रहा था। आगे की जांच के दौरान दिल्ली और लुधियाना सीमाशुल्क के सक्रिय समन्वय के साथ विभिन्न स्थानों पर तलाशी ली गई, जिसके परिणामस्वरूप दो आयातकों की गिरफ्तारी हुई।

### केस : मेसर्स नीलकंठ इम्पेक्स के द्वारा सौंदर्य प्रसाधनों का आयात और पुनर्निर्यात

**तरीका :** इस केस में यह देखा गया कि आयातक के द्वारा प्रतिरूपी (डमी) माल अर्थात् 'सीमेंट ब्लॉक' को ब्रांडेड सौंदर्य प्रसाधन घोषित करते हुए उनका

पुनर्निर्यात किया जा रहा था।

आसूचना विभाग को इस मामले में एक सूचना प्राप्त हुई कि आयातक वास्तविक रूप से आयातित माल (सौंदर्य प्रसाधन) को सीमाशुल्क अधिनियम, 1962 की धारा 69 के तहत शिपिंग बिल नंबर 1974113 दिनांक 23.06.2023 के माध्यम से पुनः निर्यात का दावा प्राप्त करने के लिए कुछ डमी/अनुचित सामान का निर्यात कर सकता है।

इस मामले में 02 अधिकारियों को निलंबित कर दिया गया और साथ ही, आयात में शामिल 03 व्यक्तियों को सीमाशुल्क

अधिनियम, 1962 की धारा 135 के तहत दंडनीय अपराध करने के लिए गिरफ्तार किया गया।

## वास्तविक माल बदला हुआ माल केस : रोहिन्जन वेयरहाउस में आयातित माल की चोरी और अदला बदली

मेसर्स रोहिंजन कंटेनर यार्ड प्रा. लिमिटेड के वेयर हाउस में जमा किए हुए माल को घटिया माल से बदल दिया गया।

**तरीका :** 14 करोड़ रुपये के बाजार मूल्य वाले 14 कंसाइनमेंट की जांच करने पर यह पाया गया कि विवरण में दिए गए माल को पूरी तरह से घटिया माल से बदल दिया गया था। वास्तविक रूप से जब्त किया गया माल जैसे- खसखस (पोपी सीड), पुरानी कापीअर मशीनें,

मोबाइल उपकरण, जूते आदि था, जिसको पुराने कबाड़ से बदल दिया गया था।

**गिरफ्तारी :** वेयरहाउस के मालिक (सेवानिवृत्त सहायक आयुक्त, सीमाशुल्क) एवं गोदाम का मैनेजर दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया।

## वास्तविक माल बदला हुआ माल चीनी पटाखों की जब्ती

**तरीका :** माल की गलत घोषणा करते हुए मॉप, रोड, ब्रश, बीच छाता जैसी वस्तुओं की घोषणा करते हुए चीनी पटाखों का आयात किया गया।

**मैसर्स आर.वी. इंपेक्स:** विशेष खुफिया जानकारी के आधार पर बिल ऑफ लैडिंग नंबर 151E500085 दिनांक 12.01.2024 और बिल ऑफ लैडिंग नंबर 151ई500384 दिनांक 27.01.2024 के अंतर्गत भारत

में तस्करी करके आयात किए जा रहे चीनी पटाखों के मामले में मेसर्स आर.वी. इम्पेक्स से पूछताक्ष की गई।

उपर्युक्त बिल ऑफ लैडिंग में घोषित सामान मॉप रॉड और ब्रश क्लीनर थे जबकि उस माल में विभिन्न प्रकार के कुल 1890 कार्टन चाइनीज पटाखे मिले। तस्करी किए गए चाइनीज पटाखों की कुल बाजार कीमत 7 करोड़ रुपये थी। इस मामले में मालिक के रूप में श्री महेंद्र लक्ष्मण मँजेरी को दिनांक 16.04.2024 को गिरफ्तार किया गया।

## गलत घोषणा द्वारा पटाखों का निर्यात

**तरीका :** छोटे पेपर पॉप (सजावटी सामान) की घोषणा करके पटाखों का निर्यात

सीएफएस स्पीडी मल्टीमोड्स लिमिटेड, जेएनसीए में मैसर्स. रोहित एंटरप्राइजेज (IEC-GUWPB9797R) ने शिपिंग बिल नंबर 4769787 दिनांक 19.10.2023 के माध्यम से गलत घोषणा करते हुए पेपर पॉप स्मॉल (सजावटी आइटम) का गलत विवरण देते हुए पटाखों का निर्यात करने का प्रयास किया।

कुल रुपये 24 लाख मूल्य के विभिन्न प्रकार के पटाखों के 157 पैकेज पाए गए।

❖❃❖

# सीमाशुल्क मुंबई अंचल-II
## जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा

### महत्वपूर्ण राजस्व आँकड़े : वित्तीय वर्ष 2023-24 एवं अप्रैल-अगस्त 2024

| क्रम | विवरण | वित्तीय वर्ष 2023-24 राशि (रु करोड़ में) | अप्रैल-अगस्त 2024 राशि (रु करोड़ में) |
|---|---|---|---|
| 1. | सकल राजस्व Gross Revenue | 147409.91 | 67773.47 |
| 2. | शुल्क वापसी बहिर्गमन Outgo of Drawback | 6569.89 | 2829.62 |
| 3. | धनवापसी बहिर्गमन Outgo of Refund | 192.17 | 116.66 |
| 4. | शुद्ध राजस्व Net Revenue | 140647.85 | 64827.19 |
| 5. | मूल सीमाशुल्क एवं अन्य BCD & Others (Net) | 41889.42 | 19334.86 |
| 6. | आईजीएसटी एवं मुआवजा उपकार IGST & Comp. Cess | 98758.44 | 45492.32 |
| 7. | आईजीएसटी धनवापसी संवितरण IGST Refund Disbursement | 25701.21 | 11814.04 |
| 8. | टी ई यू के कुल संख्या Total nos. of TEU's | 6430555 | 2930699 |
| 9. | टी ई यू के कुल संख्या Total nos. of TEU's (Import) | 3219271 | 1483134 |
| 10 | टी ई यू के कुल संख्या Total nos. of TEU's (Export) | 3211284 | 1447565 |
| 11. | स्कैन किए गए कन्टैनर<br>No. of Containers scanned (in TEUs) | 250872 | 120550 |
| 12. | फ़ाइल की गई बिल ऑफ इंट्रीस NO. of Bills of Entry filed<br>(Home Consumption + Warehouse + X Bond) | 1000364 | 444791 |
| 13. | नौवहन बिलों की संख्या No. of Shipping Bills(Given LEO) | 1489515 | 647627 |
| 14. | आयातित वस्तुओं का आकलन योग्य मूल्य<br>Assessable value of imported goods<br>(Home Consumption + Warehouse + X Bond) | 636813.92 | 295704.13 |
| 15. | शुल्कदेय माल का मूल्य Value of Dutiable Goods<br>(BEs Home Consumption + X Bond) | 535989.83 | 246427.38 |
| 16. | शुल्कमुक्त माल का मूल्य (बिल्स ऑफ एंट्रीस का घरेलू उपभोग + X बॉन्ड) Value of duty free goods<br>(Bes Home consumption + X Bond) | 56669.49 | 26637.65 |
| 17. | अधिसूचना के अनुसार छोड़ा गया राजस्व<br>Revenue forgone vide Notifications | 120226.95 | 54425.57 |
| 18. | निर्यात संवर्धन योजनाओं के द्वारा छोड़ा गया राजस्व<br>Revenue forgone by EP Schemes | 19923.92 | 8496.23 |
| 19. | डीपीडी कंटेनरों की संख्या (टीईयू)<br>No. of DPD containers (TEUs) | 1541062 | 742126 |

# ए आई क्रांति : भारत और दुनिया का भविष्य

**मोहम्मद शादाब**
**निरीक्षक (निवारक अधिकारी)**

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए आई) आज की दुनिया में एक अभूतपूर्व परिवर्तनकारी शक्ति बन चुकी है। यह तकनीक न केवल बड़े डेटा, रोबोटिक्स और इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) जैसी अन्य तकनीकों को बढ़ावा दे रही है, बल्कि यह व्यवसायों, समाजों और वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं पर गहरा प्रभाव डाल रही है। 2023 के आईबीएम ग्लोबल ए आई एडॉप्शन इंडेक्स के अनुसार, 42% बड़ी कंपनियों (जिनमें 1,000 से अधिक कर्मचारी हैं) ने ए आई को अपनाया है, और 40% इसे अपनाने की सोच रहे हैं। इसके अलावा, 38% कंपनियों ने ए आई का उपयोग शुरू कर दिया है, जो इस तकनीक के तेजी से बढ़ते प्रभाव को दर्शाता है।

ए आई का विकास एक अद्वितीय यात्रा का परिचायक है। 1951 में, क्रिस्टोफर स्ट्रेची ने एक *चेकर्स प्रोग्राम बनाया जो ए आई की शुरुआती सफलताओं में से एक थी। 1997 में, आईबीएम के *डीप ब्लू ने शतरंज ग्रैंडमास्टर गैरी कास्पारोव को हराकर दुनिया को चौंका दिया और 2011 में, आईबीएम *वाटसन ने क्विज़ शो 'जियोपार्डी' जीतकर भाषा और ज्ञान क्षेत्र में ए आई की शक्ति को प्रदर्शित किया। हाल ही में, ओपन ए आई के जीपीटी मॉडलों ने ए आई को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया है। ए आई अब वैक्सीन अनुसंधान, भाषण मॉडलिंग और अनुवाद सेवाओं में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। भविष्य में, ए आई व्यापार स्वचालन, डेटा विश्लेषण और त्वरित निर्णय लेने में क्रांतिकारी परिवर्तन लाएगा। हालांकि, नौकरियों पर संभावित प्रभाव और इसके साथ जुड़े कौशल विकास की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, मशीन लर्निंग विशेषज्ञों और सूचना सुरक्षा विश्लेषकों की मांग भी बढ़ेगी।

---

***चेकर्स प्रोग्रामः** यह एक कंप्यूटर प्रोग्राम था जिसने चेकर्स (ड्राफ्ट्स) खेल में मानव खिलाड़ियों को हराया। यह प्रोग्राम ए आई का एक प्रमुख उदाहरण था जो गेम की रणनीतियों को सीखता और अनुकूलित करता था।

***आईबीएम का डीप ब्लूः** यह एक कंप्यूटर था जिसने 1997 में विश्व चेस चैंपियन गैरी कास्परोव को हराया। यह एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर था ए आई और कंप्यूटर चेस में।

***आईबीएम वाटसनः** यह एक ए आई सिस्टम है जिसने 2011 में क्विज़ शो 'जियोपार्डी!' में मानव प्रतियोगियों को हराया। यह प्राकृतिक भाषा प्रोसेसिंग और ज्ञान अधिग्रहण में सक्षम था।

---

डेटा गोपनीयता एक महत्वपूर्ण मुद्दा है, क्योंकि ए आई मॉडल को प्रशिक्षित करने के लिए विशाल मात्रा में डेटा की आवश्यकता होती है। इस संदर्भ में, डेटा गोपनीयता और पारदर्शिता पर जोर देने वाले नियम बन रहे हैं। ए आई के पर्यावरणीय प्रभाव भी मिश्रित हैं; जबकि यह आपूर्ति श्रृंखलाओं को अधिक कुशल बना सकता है, इसके संचालन के लिए ऊर्जा की भी

आवश्यकता होती है, जिससे स्थिरता की चुनौती बनी रहती है।

भारत में ए आई का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है, जिसमें विनिर्माण, स्वास्थ्य सेवा, वित्त, शिक्षा, मीडिया, ग्राहक सेवा और परिवहन जैसे प्रमुख क्षेत्र शामिल हैं। भारत में 59% कंपनियां ए आई का उपयोग कर रही हैं और 74% ने पिछले दो वर्षों में ए आई में निवेश बढ़ाया है। यह वृद्धि प्रक्रियाओं को स्वचालित करने, लागत को कम करने, और ए आई उपकरणों में सुधार से प्रेरित है।

**विनिर्माण में ए आई**

भारत में ए आई-सक्षम रोबोटिक्स और पूर्वानुमानात्मक रखरखाव विनिर्माण क्षेत्र में उत्पादकता को नई ऊंचाइयों पर ले जा रहे हैं। ये तकनीकें संचालन को अनुकूलित करने, डाउनटाइम को कम करने, और गुणवत्ता नियंत्रण में सुधार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

**स्वास्थ्य सेवा में ए आई**

स्वास्थ्य सेवा में ए आई का उपयोग रोग निदान, दवा की खोज, और मरीजों की निगरानी में क्रांतिकारी बदलाव ला रहा है। वर्चुअल नर्सिंग सहायक और बड़ी डेटा विश्लेषण क्षमताएं स्वास्थ्य सेवा को अधिक कुशल और सुलभ बनाती हैं, जिससे उपचार की गुणवत्ता और स्वास्थ्य सेवा प्रणाली की पहुंच में सुधार होता है।

**वित्त में ए आई**

भारतीय वित्तीय संस्थान धोखाधड़ी का पता लगाने, ऑडिट करने और ऋण के लिए ग्राहकों का मूल्यांकन करने में ए आई का उपयोग कर रहे हैं। ए आई की विशाल डेटा सेट को संसाधित करने की क्षमता स्मार्ट निवेश निर्णय लेने और जोखिम आकलन में मदद करती है, जिससे वित्तीय प्रबंधन और ग्राहक सेवा में सुधार होता है।

**शिक्षा में ए आई**

शिक्षा क्षेत्र में ए आई पाठ्यपुस्तकों के डिजिटलीकरण, साहित्यिक चोरी का पता लगाने और सीखने के अनुभव को व्यक्तिगत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। ए आई उपकरण छात्रों की भावनात्मक स्थिति की पहचान करने में सक्षम हैं, जिससे शिक्षकों को व्यक्तिगत जरूरतों को पूरा करने में सहायता मिलती है।

**मीडिया और ग्राहक सेवा में ए आई**

भारतीय मीडिया ए आई-संचालित उपकरणों के लाभों से लाभान्वित हो रहा है, जो सामग्री निर्माण और वितरण को अधिक कुशल बनाते हैं। ग्राहक सेवा उद्योग भी ए आई चैटबॉट्स और वर्चुअल सहायक का उपयोग करके ग्राहक इंटरैक्शन और समर्थन को बढ़ा रहा है, जिससे ग्राहक संतोष में वृद्धि हो रही है।

**परिवहन में ए आई**

परिवहन क्षेत्र में ए आई-चालित नवाचार, जैसे सेल्फ-ड्राइविंग कारें और ए आई ट्रैवल प्लानर, भारत में यात्रा के तरीकों को बदल रहे हैं। ये प्रगति यात्रा की दक्षता और सुरक्षा में सुधार का वादा करती हैं, जिससे यातायात प्रबंधन और यात्रा अनुभव में बदलाव आ रहा है।

भारत में ए आई का उपयोग रोजगार विघटन, डेटा गोपनीयता मुद्दों और नियामक ढांचे की जरूरत जैसी चुनौतियों का सामना करता है। ए आई के कारण रोजगार पर असर को देखते हुए, कौशल विकास और पुनः कौशल नीतियों की आवश्यकता है। डेटा गोपनीयता चिंताओं के लिए कड़े नियमों की आवश्यकता है।

भारत की बड़ी और विविध आबादी ए आई को समावेशी विकास के लिए एक अनूठा अवसर प्रदान करती है। डिजिटल बुनियादी ढांचे, शिक्षा, और नियामक ढांचे में निवेश करना ए आई की पूरी क्षमता को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है।

ए आई क्रांति भारत और दुनिया को बदल रही है। ए आई नवाचार और विकास की असीम संभावनाएं प्रदान करता है, लेकिन इसे प्रबंधित करने के लिए चुनौतियां भी हैं। शिक्षा में निवेश, मजबूत नियामक ढांचे और समावेशी ए आई-चालित वातावरण को बढ़ावा देकर, भारत ए आई की शक्ति का उपयोग सभी के लाभ के लिए कर सकता है। ए आई का भविष्य हमारी चुनौतियों और अवसरों को नेविगेट करने की क्षमता पर निर्भर करता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि ए आई सकारात्मक परिवर्तन और प्रगति के लिए एक बल के रूप में कार्य करता है।

❖❖❖

# कार्यस्थल में मानसिक स्वास्थ्य- भारतीय सीमाशुल्क अधिकारियों के लिए एक प्राथमिकता

**विशाल मल्होत्रा**
**कर सहायक**

कार्यस्थल पर मानसिक स्वास्थ्य महत्वपूर्ण है, खासकर भारतीय सीमाशुल्क अधिकारियों के लिए जो सरकारी लक्ष्यों को प्राप्त करने की उच्च दबाव वाली स्थितियों, कड़ी डेडलाइन और देश के व्यापार और सुरक्षा के प्रबंधन में महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों का सामना करते हैं। न केवल अधिकारियों के हित सुनिश्चित करने के लिए, बल्कि सीमाशुल्क संचालन के सुचारू कामकाज को सुनिश्चित करने के लिए मानसिक स्वास्थ्य बनाए रखने पर ध्यान देना अनिवार्य है।

सीमाशुल्क अधिकारी फ्रन्ट लाइन में हैं, व्यापार को सुविधाजनक बनाते हैं, तस्करी को रोकते हैं और कानून का अनुपालन सुनिश्चित कर रहे हैं। सीमाशुल्क अधिकारियों को कई कसौटियों से गुजरना पड़ता है जिसमें निरंतर सतर्कता, त्वरित निर्णय लेने और चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में काम करना शामिल है। इतना तनावपूर्ण माहौल चिंता, अवसाद और थकान जैसी समस्याओं को जन्म देता है। मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों से जूझ रहे एक अधिकारी को एकाग्रता, निर्णय लेने और उत्पादकता के साथ संघर्ष करना पड़ता है, जिससे उनकी सीमाशुल्क संचालन की समग्र दक्षता प्रभावित हो सकती है।

अवैध गतिविधियों से निपटने, नियमों को लागू करने और व्यापक स्तर के व्यापार प्रबंधन का तनाव सीमाशुल्क अधिकारियों के मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा असर डालता है। बढ़े हुए कामकाजी घंटे और अनियमित शिफ्ट काम करने की शैली में संतुलन को बाधित कर सकते हैं, जिससे शारीरिक और मानसिक थकावट हो सकती है। तस्करी की गतिविधियों और अन्य आपराधिक गतिविधियों का लगातार सामना करना हमारे लिए ट्रॉमैटिक होता है, जिससे मानसिक स्वास्थ्य पर हानिकारी रूप में प्रभाव पड़ सकता है। यह दुःख कि बात है कि भारतीय सीमाशुल्क सहित कई कार्यस्थलों में मानसिक स्वास्थ्य का विषय आज भी एक गलत धारणा से जुड़ा हुआ है।

इन चुनौतियों से निपटने के लिए सक्रिय कदम उठाना जरूरी है। इस विषय में जागरूकता पैदा करना और मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी गलत धारणा को बदलना महत्वपूर्ण है। मानसिक स्वास्थ्य के महत्व एवं डिस्ट्रेस लक्षणों को पहचानें और इस संबंध में मदद मांगने के बारे में अधिकारियों को जागरूक करना एक सार्थक कदम हो सकता है। नियमित प्रशिक्षण सत्र, कार्यशालाएँ और सेमिनार इस संबंध में मददगार साबित होंगे।

मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की सहज उपलब्धता की अत्यावश्यक है। इसमें ऑन-साइट काउसलिंग सेवाएँ, हेल्पलाइन और मानसिक स्वास्थ्य प्रोफेशनल के साथ साझेदारी शामिल हो सकती है। एक डेडीकेटिड सपोर्ट सिस्टम अधिकारियों को जरूरत पड़ने पर मदद लेने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है। योग, ध्यान और विश्राम तकनीक जैसे नियमित तनाव प्रबंधन कार्यक्रम अधिकारियों को दैनिक तनाव से निपटने में मदद कर सकते हैं। इन कार्यक्रमों को नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम में एकीकृत करने से यह सुनिश्चित होता है कि अधिकारियों के पास तनाव को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए आवश्यक उपकरण हों।

मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए एक अभिनव दृष्टिकोण हर सप्ताह एक बार 'मेडिटेशन आवर' शुरू करना है। इस घंटे के दौरान, अधिकारी तनाव कम करने और फोकस बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किए गए निर्देशित ध्यान सत्रों में भाग ले सकते हैं। इसे सुविधाजनक बनाने के लिए, कार्यस्थल के भीतर समर्पित पॉड या ध्यान कक्ष स्थापित किया जा सकता है। ये शांत स्थान अधिकारियों को माइन्ड फुलनेस

और रीलैक्सैशन तकनीकों का अभ्यास करने के लिए एक शांत आश्रय प्रदान करेंगे, जिससे अधिक संतुलित मानसिक स्थिति को बढ़ावा मिलेगा।

इसके अलावा, सरकार सीमाशुल्क अधिकारियों के लिए मासिक दो बार परामर्श सत्र प्रायोजित कर सकती है। पेशेवर परामर्शदाता द्वारा आयोजित ये सत्र अधिकारियों को उनकी चिंताओं पर चर्चा करने और विशेषज्ञ मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए एक सुरक्षित और गोपनीय स्थान प्रदान करेंगे। यह पहल न केवल अधिकारियों के मानसिक स्वास्थ्य का समर्थन करेगी बल्कि उनके हित के प्रति प्रतिबद्धता भी प्रदर्शित करेगी।

मानसिक स्वास्थ्य के लिए स्वस्थ वर्क-लाइफ बैलन्स को प्रोत्साहित करना आवश्यक है। लचीले कामकाजी घंटों, नियमित ब्रेक और समय-अवकाश का समर्थन करने वाली नीतियां थकान को रोकने और स्वस्थ कार्य वातावरण को बढ़ावा देती हैं। एक सहायक और समझदार कार्य वातावरण एक अधिकारी के मानसिक स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण अंतर लाता है। बातचीत को प्रोत्साहित करना, सहकर्मी सहायता कार्यक्रम प्रदान करना और सहानुभूति और समर्थन की संस्कृति को बढ़ावा देना एक सकारात्मक कार्यस्थल बनाता है।

नियमित मानसिक स्वास्थ्य मूल्यांकन करने से किसी भी समस्या की शीघ्र पहचान करने और समय पर सहायता प्रदान करने में मदद मिल सकती है। ये आकलन अधिकारियों के लिए व्यापक स्वास्थ्य देखभाल सुनिश्चित करने के लिए नियमित स्वास्थ्य जांच का हिस्सा हो सकते हैं। कार्यस्थल पर मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में लीडरशिप महत्वपूर्ण भूमिका है। लीडरस को उदाहरण सहित दिखाना चाहिए कि मानसिक स्वास्थ्य के बारे में बात करना और मदद मांगना गलत नहीं है। उन्हें यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि मानसिक स्वास्थ्य नीतियों को प्रभावी ढंग से लागू किया जाए और इसके संसाधन उपलब्ध हों।

हम दुनिया भर के अन्य संगठनों से भी हमें सीख लेनी चाहिए। उदाहरण के लिए, यूके बॉर्डर फोर्स ने अपने प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मानसिक स्वास्थ्य सहायता को शामिल किया है और अपने अधिकारियों को व्यापक सहायता सेवाएँ प्रदान की हैं। इसी तरह, ऑस्ट्रेलियाई सीमा बल ने रेज़ीलीयन्स -बिल्डिंग कार्यक्रम विकसित किया है और अपने कर्मचारियों को निरंतर मानसिक स्वास्थ्य सहायता प्रदान करता है।

अंतर्राष्ट्रीय अध्ययनों में 'कार्यस्थल में मानसिक स्वास्थ्य' के महत्व के बारे में बताया गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के एक अध्ययन में पाया गया कि सामान्य मानसिक स्वास्थ्य विकारों के इलाज में निवेश किए गए प्रत्येक 1 डॉलर से बेहतर स्वास्थ्य और प्रोडक्टिविटी में 4 डॉलर का रिटर्न मिलता है। इसी तरह, मानसिक स्वास्थ्य और नियोक्ताओं पर डेलॉइट की एक रिपोर्ट में इस बात पर जोर दिया गया है कि खराब मानसिक स्वास्थ्य के कारण ब्रिटेन के नियोक्ताओं को हर साल 45 बिलियन तक का नुकसान होता है, जो मानसिक स्वास्थ्य पहल में निवेश के आर्थिक लाभों को रेखांकित करता है। इसके अलावा, जर्नल ऑफ ऑक्यूपेशनल हेल्थ साइकोलॉजी में प्रकाशित एक अध्ययन से पता चला है कि तनाव प्रबंधन कार्यक्रमों सहित कार्यस्थल में नियोक्ता के द्वारा बीच बचाव से कर्मचारियों के बीच चिंता और अवसाद के लक्षणों को काफी कम किया जा सकता है।

भारतीय सीमाशुल्क के अच्छे कामकाज के लिए सीमाशुल्क अधिकारियों का मानसिक स्वास्थ्य आवश्यक है। जागरूकता पैदा करके, मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच प्रदान करके, तनाव प्रबंधन कार्यक्रमों को लागू करके, वर्क-लाइफ बैलन्स को बढ़ावा देकर, काम के लिए प्रोत्साहित करने वाले वातावरण का निर्माण करके, नियमित मानसिक स्वास्थ्य मूल्यांकन आयोजित करके और लीडरशिप को शामिल करके, हम अपने अधिकारियों का मानसिक हित सुनिश्चित कर सकते हैं।

सीमाशुल्क अधिकारियों के मानसिक स्वास्थ्य के बारे में जागरूक होना उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने और उनकी उत्पादकता और प्रभावशीलता को बढ़ाना है। यह एक लचीली, कुशल और उत्तरदायी सीमाशुल्क सेवाओं के निर्माण की दिशा में एक आवश्यक कदम है, जो आज के गतिशील और डीमांडिंग माहौल की चुनौतियों का सामना कर सकते हैं। मेडिटेशन और सरकार-प्रायोजित परामर्श सत्र जैसी पहल की मानसिक रूप से स्वस्थ कार्यस्थल को बढ़ावा देने की हमारी प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि हमारे अधिकारी अपनी महत्वपूर्ण व्यापक भूमिकाओं को संभालने के लिए अच्छी तरह से सुसज्जित हैं।

❖❖❖

# वास्तुशास्त्र विज्ञान

संगीता अधिकारी
सहायक आयुक्त, सीमाशुल्क

वास्तुशास्त्र विज्ञान अंधविश्वास नहीं अटल सत्य है। ऋग्वेद के 8 विभागों में से एक विभाग वास्तु विज्ञान है। वास्तु विज्ञान में 2 + 2 = 4 ही होता है।
वास्तुशास्त्र में 10 दिशाएं होती हैं।

**ईशान कोण (North East),**
**पूर्व, आग्नेय कोण (South East),**
**दक्षिण, नेत्रग्य कोण (South West),**
**पश्चिम, वायव्य कोण (North West) उत्तर,**
**पृथ्वी और आकाश**

परिसर के केंद्र/ मध्य में खड़े होकर कम्पास से दिशा का पता चलता है।

जिस मकान में चारों कोने खुले हैं उस घर को सभी दिशाओं

की ऊर्जा मिलती है। ईशान गुरु की दिशा है यह पढ़ाई के लिए सर्वोत्तम है।

अग्नि गर्म स्थान है और रसोई के लिए सर्वोत्तम है।

नेत्रज्ञ में पृथ्वी तत्व शामिल हैं और यह परिवार के मुखिया के शयनकक्ष के लिए सर्वोत्तम है। वायव्य चपलता युक्त है यह ड्राइंगरूम के लिए सबसे अच्छा है। घर में पूर्वमुखी द्वार निवासी को नाम और प्रसिद्धि देता है। उत्तर की ओर मुख वाला घर कभी भी वित्तीय संकट का सामना नहीं करता है और यह निवासियों को आवश्यकतानुसार पर्याप्त धन देता है।

पश्चिम दिशा का प्रवेश द्वार शनि का द्वार है और यह वकालत और तेल संबंधी कार्यों के लिए सर्वोत्तम है।

दक्षिण दिशा मंगल की दिशा है और यह 24 घंटे में 26 घंटे का काम देती है। नेरित्य के द्वार से दुर्गति निश्चित है और यह व्यक्ति को बिना पैराशूट के गिरा देता है। अग्नि का द्वार स्थायी बीमारियाँ आना निश्चित है। दुनिया, देश, राज्य, शहर, ब्लॉक के दक्षिण पश्चिम क्षेत्र में रहने वाले लोग आर्थिक रूप से संपन्न होते हैं । ईशान में रहने वाले लोग ज्ञानी होते हैं। वायव्य में रहने वाले लोग ख्याली पुलाव बनाने वाले और विदेश भ्रमण करते हैं। ब्राह्म स्थान में खड्डु। पेट के रोग देता है।यह अचानक मृत्यु का कारण भी है। जलियावाला बाग इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। बगीचे के मध्य में एक कुआं था। ऑफिस, घर के नेत्रग्य में रहने वाला व्यक्ति अधिकारी पर भी भारी होता है। ईशान में रहने वाले व्यक्ति का उधार दिया हुआ धन कभी वापस नहीं आता। लिफ्टमैन भी उसके लिए दरवाजा नहीं खोलता।

वायव्य में रहने वाला व्यक्ति अपने स्थान पर नहीं टिकेगा सिर्फ ख्याली पुलाव बनाएगा। दक्षिण दिशा में पैर करके सोने से सिर भारी रहता है और चिडापन बना रहता है।

सीताफल और जामफल का झाड़ दरिद्रता लाता है। उत्तर दिशा में पानी का संग्रह होने पर धन का संग्रह होता है और पत्तियों से बचाव होता है। ईशान में पानी विपत्ति से बचाव और प्रगति प्रदान करता है।

पश्चिम दिशा में पानी का स्थान धन का संग्रह करता है। दक्षिण दिशा में पानी परेशानी दिलाता है।

ईशान कटा हुआ प्रगति में बधा देता है। दक्षिण पूर्व बढ़ा हुआ लड़कियों के विवाह में विलम्ब होता है।

ईशान बढ़ा हुआ तरक्की के रास्ते खुल जाते हैं। दक्षिण बढ़ा हुआ न्यायालय के चक्कर कटवाता है दक्षिण कटा हुआ पैसा होते हुए भी दरिद्र का जीवन जीता है अग्नि कटा हुआ और अग्नि में पानी भोग विलासिता में कमी लाता है।

वास्तु को कुछ हद तक ठीक करके हम कई बीमारियों से बच सकते हैं जैसे मधुमेह, रक्तचाप, त्वचा रोग, कैंसर, डिपरेशन, आत्मघाती प्रवृत्ति इत्यादि।

**❖ कृपया इस विषय पर किसी भी समय मो. 9427526952 पर संपर्क करें।**

❖❖❖

## 75वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर राजेश पाण्डे, प्रधान मुख्य आयुक्त द्वारा ध्वजारोहण एवं संबोधन

उत्कृष्ट सेवाओं हेतु प्रधान मुख्य आयुक्त महोदय के करकमलों द्वारा प्रमाणपत्र वितरित किए गए।

# ‘द ग्रेट एमू वॉर’- एक रोचक घटना

परीक्षित तिवाड़ी
निरीक्षक (निवारक अधिकारी)

इंसान और इंसान के बीच की लड़ाई तो आपने कई बार देखी या सुनी होगी, लेकिन क्या कभी आपने पक्षियों और इंसानों के बीच युद्ध हुआ हो ऐसा देखा या सुना है? जी हाँ, पक्षियों और इंसानों के बीच युद्ध। ये रोचक घटना साल 1932 की है, जिसके बारे में जो भी सुनता है, वो हैरान हुए बिना नहीं रहता। दरअसल, प्रथम विश्व युद्ध के बाद सेवानिवृत हुए कुछ सैनिकों को ऑस्ट्रेलियाई सरकार द्वारा पुनर्वास के लिए जमीनें दी गई थी। ये जमीनें ज्यादातर पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया में थी। अब सैनिक यहां किसान बन गए और अपनी-अपनी जमीनों पर खेती करने लगे, लेकिन कुछ ही समय बाद उनके फसलों पर विशालकाय जंगली पक्षी एमू का हमला हो गया। यहां सबसे हैरान करने वाली बात यह थी कि इन पक्षियों की संख्या 2-4 नहीं बल्कि 20 हजार के करीब थी।

एमू का झुंड आता और किसानों की फसलों को बर्बाद करके चला जाता। सिर्फ यही नहीं, उन्होंने खेतों की रक्षा के लिए जो बाड़ लगाई थी, उसे भी उन पक्षियों ने तोड़ दिया था। जब ऐसा अक्सर होने लगा तो किसान बने सैनिकों का एक प्रतिनिधिमंडल सरकार के पास अपनी गुहार लेकर पहुंचा। अब समस्या की गंभीरता को देखते हुए किसानों की मदद के लिए ऑस्ट्रेलिया के तत्कालीन रक्षामंत्री ने मशीन गन से लैस सेना की एक टुकड़ी भेजी।

वह 2 नवंबर, 1932 का दिन था। सरकार द्वारा भेजी गई सेना ने एमूओं को भगाने वाला ऑपरेशन शुरु किया। उन्हें एक जगह पर 50 एमूओं का झुंड दिखा, लेकिन जब तक वो मशीन गन से उन पर निशान लगाते तब तक उन पक्षियों का झुंड खतरा भांपकर वहां से भाग निकला।

4 नवंबर, 1932 को भी कुछ ऐसा ही हुआ। सैनिकों ने करीब 1000 एमूओं को देखा और वो उनपर फायर करने ही वाले थे कि मशीन गन जाम हो गयी। जब तक यह ठीक हो पाती, तब तक अधिकतर एमू वहां से भाग गए। फिर भी सैनिकों ने करीब 12 एमूओं का मार गिराया था, लेकिन अब एमू काफी सर्तक हो गए। अब एमूओं ने अपनी रक्षा के लिए खुद को छोटे-छोटे समूहों में बाँट लिया था और हर समूह में एक एमू निगरानी के काम में लगा रहता था, ताकि हमला होने से पहले ही वह बाकियों को सर्तक कर सके, जिससे सभी वहां से भाग निकलें।

करीब 6 दिन चले इस अभियान में सैनिकों ने 2500 राउंड फायर किए, लेकिन 20 हजार में से वह केवल 50 एमूओं को मारने में ही सफल हो सके। बाद में जब इन घटनाओं पर मीडिया की नजर पड़ी तो सरकार की आलोचना होने लगी। आखिरकार सरकार ने सेना को वापस बुला लिया। लेकिन जब खेतों पर एमूओं के हमले काफी तेज हो गए तो एक बार फिर 13 नवंबर को सेना ने ऑपरेशन शुरू किया।

हालांकि पिछली बार की तरह ही इस बार भी निहत्थे और उड़ने में अक्षम एमूओं ने सेना को हरा दिया। कहते हैं कि इस अभियान के नेतृत्वकर्त्ता मेजर मार्डिथ ने कहा था कि उनके पास भी एमू पक्षियों की एक डिवीजन होती और वो गोली चला सकते तो, वह दुनिया की किसी भी फौज का सामना कर सकते थे। इस घटना को ‘एमू वॉर’ या ‘द ग्रेट एमू वॉर’ के नाम से जाना जाता है।

❖❖❖

# सिर्फ एक आस

**गौरव कुमार**
**(कर सहायक)**

आज की भाग-दौड़ भरी लाइफ में सभी लोग इतने व्यस्त हैं की उन्हें न आज की फिक्र है न कल की। बस भागम-भाग में लगे हैं। जब हफ्ते भर की भागम-भाग से लोग थकते हैं तो फिर एक पल की शांति के लिए थोड़ा वक्त अपने लिए निकालते हैं और कहीं घूमने या फिर तीर्थ पर निकलते हैं। इन सबके बीच कुछ लोग, कुछ नहीं बहुत से लोग ऐसे भी हैं, जो अपने जीवन की परेशानियों से लड़ रहे होते हैं 'सिर्फ एक आस' पर कि शायद कल सब ठीक हो जायेगा और उनके जीवन में भी खुशियाँ आ जाएँगी। आज हम ऐसे ही एक किरदार के बारे में बात करेंगे। श्याम, जो कि जीवन भर सिर्फ एक इसी आस को लेकर जीता रहा कि एक दिन शायद सब कुछ अच्छा हो जायेगा।

श्याम एक बहुत ही गरीब परिवार में पैदा हुआ, इतना गरीब परिवार कि दो जून तो दूर एक जून रोटी का भी पक्का ठिकाना नहीं। उसके दो बड़े भाई एवं दो बड़ी बहन और दो छोटी बहन थे। उसका जीवन गरीबी में तो बीत ही रहा था साथ ही साथ तिरस्कार का जीवन भी वह जी रहा था। लोग उसके बड़े भाई की इज्जत तो करते थे पर उसकी नहीं, साथ ही आये गए उसकी झूठी शिकायत भी उसके बड़े भाई से करते रहते थे। उसके बड़े भाई पैसे से तो बहुत गरीब जरूर थे पर प्रतिष्ठा के मामले में बहुत धनी थे। ऐसे में उन्हें अपने छोटे भाई की शिकायत रास न आती और उसे पीट दिया करते थे।

थोड़े बड़े होने के बाद श्याम ने ट्यूशन पढ़ना शुरू कर दिया, उसकी संगती सभी तरह के लोगों से थी कुछ अच्छे, कुछ बुरे। बुरी संगत होने की वजह से उसे धूम्रपान एवं शराब पिने की आदत भी लग गई। पर वह ये सब कभी कभार ही किया करता था, क्योंकि थोड़ा डर तो उसे अपने बड़े भाई से अब भी था ही। थोड़े और समय बीते उसे दूसरे शहर जाकर काम करने का एक मौका भी मिला, पर उसने बाहर जाना ठीक न समझा। उसके कई दोस्त बाहर निकल गए, पर वह यहीं रहकर कुछ अच्छा रोजगार ढूंढ़ने की कोशिश करने लगा।

इसी बीच उसके परिवार में उसकी शादी की बात चलने लगी और शादी तय होने से पहले ही एक अच्छा काम मिल गया। यह काम था एक एजेंट का, किसी फाइनेंशियल कंपनी में। उसकी शादी हुई, दो बच्चे हुए और वह इतनी लगन से काम करने लगा कि देखते ही देखते पांच सालों में वह अच्छे पैसे कमाने लगा। उसने एक बाइक खरीदी, एक पक्का मकान बनाया और भी बहुत सारी चीजें खरीदी। अब उसके आस पड़ोस के लोग जो कल तक उसे भाव नहीं देते थे, झूठी शिकायतें करते थे, अब उससे ईर्ष्या करने लगे कि कैसे ये इतनी जल्दी इतना आगे बढ़ गया, जो हमारे सामने यूं ही घूमा करता था आज हमारे सामने गाड़ी से घूमता है, एक अच्छी लाइफ स्टाइल जीता है।

समय का पहिया घूमा और परेशानियों ने फिर उसके घर दस्तक दी। उसकी अच्छी खासी चलती फाइनेंशियल कंपनी भाग गई, उसकी आमदनी लगातार

कम होती गई, उसकी लोकप्रियता कम होने लगी, लोग अपने पैसों के लिए उसे तंग करने लगे। यह सब चलता रहा वह फिर एक आस पर सब झेलता गया कि कल शायद फिर से सब अच्छा हो जायेगा, फिर उसकी जिंदगी पटरी पर आ जाएगी। कुछ दिन और बीते, कुछ दिनों से उसके दांतों में दर्द सा रहने लगा, वो ये सोचकर टालता रहा कि शायद ऐसे ही दर्द हुआ होगा, अपने आप ठीक हो जायेगा। पर ऐसा हुआ नहीं। छः महीने बीत गए उसका दर्द कम होने का नाम नहीं ले रहा था, फिर एक दिन वह डॉक्टर के पास जाता है जहां उसे पता चलता है उसे कैंसर है। उसके पैरों तले जमीन खिसक जाती है आर्थिक परेशानी तो चल ही रही थी, अब इतनी बड़ी बीमारी।

परिस्थियों से लड़ते हुए वह बहुत मजबूत हो चुका था। वह बिल्कुल धैर्य के साथ बड़े शहर में अपने इलाज के लिए जाता है, उसे सरकारी मदद भी मिलती है और उसका सक्सेसफुल ऑपरेशन होता है। वह घर लौटकर आता है, डॉक्टर ने उसे रेगुलर चेकअप के लिए कहा था। वह अक्सर चेकअप के लिए जाता रहता है। चार महीने के बाद उसे फिर से परेशानी महसूस होने लगी, टेस्ट कराया तो पता चला कैंसर ने उसे फिर से दबोच लिया है। फिर वह हार नहीं मानता है और इलाज के लिए और बड़े हॉस्पिटल जाता है पर वहां भी अब उसका इलाज संभव नहीं है। अब श्याम अपनी आखरी सांसे गिन रहा है, अब उसकी आस ख़तम हो चुकी है।

दुनिया में हर किसी के जीवन में परेशानियाँ हैं, हर इंसान अपनी मुश्किलों से खुद ही लड़ रहा है सिर्फ एक आस में कि कल सब अच्छा हो जायेगा। अगर ये आस न हो तो जीवन जीना बहुत ही मुश्किल हो जायेगा।

❖❖❖

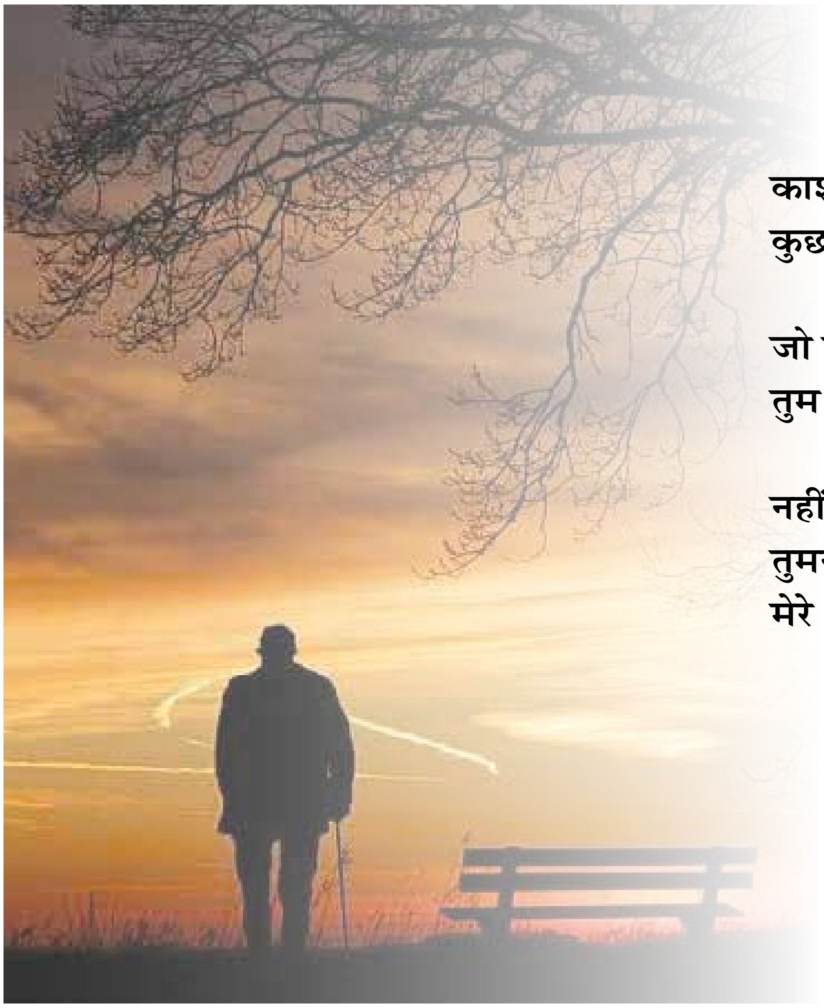

**काश तुम कुछ दिन और ठहरते**
**कुछ लम्हे और मेरा इंतजार करते**

**जो मैं कुछ न कह सका**
**तुम तो कुछ कहते,**

**नहीं मेरी चाहत में कोई कमी थी**
**तुमने देखा नहीं जाते हुए शायद**
**मेरे आँखों में समन्दर सी नमी थी।**

**- सौरभ सिन्हा,**
अनुज श्री गौरव कुमार,
कर सहायक

# क्या मैं एक अच्छा बॉस हूँ....... !

रूपेश एस सक्सेना
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

बॉस अर्थात् साहब, मालिक, बड़े साहब, सर .........वगैरह वगैरह। हम यही बोलते हैं, गूगल में सर्च करने पर दिलचस्प परिभाषा मिली......

*''एक आधिकारिक व्यक्ति जो आपको बताता है कि काम पर क्या करना है''*

9 से 5 बजे वाली नौकरी करने वाले एक सामान्य से सरकारी कर्मचारी के जीवन चक्र में एक समय ऐसा भी आता है कि 15-20 वर्षों में उसे भी कोई बॉस बोलने लगता है। ईश्वर की कृपा और अपनी मेहनत से कुछ चुने हुए लोग पहले से ही बॉस बनकर आते हैं। मेरे कार्यालय में तो ऐसे आशीर्वाद पाए बॉस लोगों की तो भरमार है। बहुत से लेख पढ़कर, अपने सरकारी सेवाओं के 23 वर्षों के अनुभवों को मिला कर, मैं अपने आप को बलि का बकरा बनाते हुए एक अच्छे बॉस बनने की क्या-क्या पहचान होती है, बताने की कोशिश कर रहा हूँ।

अमेरिकन लेखक जी एल हॉफ़मेन के अनुसार एक सफल बॉस बनाने की सबसे बड़ी खूबी है कि उसे एक फुटबाल कोच वाली सोच रखनी चाहिए। क्यों? क्योंकि कोच अपने खिलाड़ियों के लिए सर्वोत्तम स्थिति जानते हैं। एक बॉस के रूप में, आपको कर्मचारियों को ऐसी स्थिति में रखना होगा जहाँ वे सफल हो सकें। कोच, (बॉस) समायोजन करने में सक्षम है, वह जानता है कि खिलाड़ियों को कैसे विकसित करना है।

न्यूयॉर्क टाइम्स के लेखक मार्क मर्फी 'लीडरशिप आईक्यू' नाम की लीडरशिप प्रशिक्षण और कर्मचारी सहभागिता सर्वेक्षण फर्म स्थापित की है, जिसके अनुसार

एक अच्छे बॉस बनने के लिए आवश्यक है कि आप अपने कर्मचारियों के साथ समय बिताएं। बॉस के रूप में अदृश्य न बने रहें। उन्होंने एक शोध किया कि बॉस और स्टॉफ को एक सप्ताह में लगभग 06 घंटे एक साथ समय बिताना चाहिए ताकि वो प्रेरित हो सकें। सीधी सी बात है कि आप अपने अधीनस्थों को समय

देंगे तो उनको भी आभास होगा कि वे उनके सहकर्मी हैं न कि बॉस।

'द केन ब्लैंचर्ड कंपनीज' के उपाध्यक्ष 'रैंडी कॉनली' का सुझाव है कि गलतियों पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, कार्यस्थल के मनोबल को बढ़ाने के लिए ''जो अच्छी चीजें की जा रही हैं, उन्हें नोटिस करना, प्रोत्साहित करना और उनका सेलेब्रेशन करना चाहिए।'' कॉनली यह भी सुझाव देते हैं कि बैठकों में एजेंडे, 'प्रशंसा' के साथ शुरू होने चाहिए। मैं बार-बार यह सोचता हूँ कि क्या ऐसा मेरे साथ होता है? पर बढ़ते अनुभव के साथ अब इसके यह सोचने लगा हूँ कि मेरे साथ जो हुआ सो हुआ, पर मैं तो अपने अधीनस्थों के साथ ऐसा कर सकता हूँ।

बॉस के रूप में हमें अपनी टीम का आकलन करना चाहिए और प्रबंधन का कार्यभार का ध्यान रखना चाहिए, ताकि आपके अधीन कार्य करने वाले सारा ध्यान काम में लगा सकें और जीत और आत्मविश्वास प्राप्त कर सकें। कभी-कभी उल्टा भी होता है कि आपके अधीन ही आपके बॉस बन जाते हैं, उस समय तर्क के साथ उनको उनके दायित्व बतलाने में जरा भी देर नहीं करनी चाहिए। मैंने ऐसा नहीं किया, जिसका परिणाम यह रहा कि कनिष्ठों के द्वारा मेरी ही कमियाँ निकाली जाने लगीं।

यदि मैं अपने आप से पूछता हूँ कि क्या मैं वाकई एक अच्छा बॉस हूँ तो सबसे बड़ी बात मेरे सामने आती है, वह है 'एहसास' अर्थात् 'किसी स्थिति से अवगत होगा या समझना'। हम सभी के जीवन में ऐसे दिन आते हैं जब सब कुछ योजना के अनुसार नहीं होता। जब ऐसा होता है, तो आप अपना आपा खो बैठते हैं, गुस्सा दिखाना शुरू कर देते हैं, चिल्लाते हैं। क्या आपको यह एहसास होता है कि अमुक अमुक अधीनस्थ अधिकारी को मैंने डांट दिया भले वह गलत हो या सही; उसके बाद उसके मन में क्या क्या होता है। संभावनाएं हैं कि या तो वह अपनी गलती को जानेगा या आक्रोश से भर जाएगा या मन में आपके प्रति नफरत का भाव रखेगा और यदि निर्दोष होने के बाद भी आपके कोप का भाजक बनता है तो वह अवसाद या डिप्रेशन में भी जाएगा या उससे और भी ज्यादा गलतियाँ होगी। एक बॉस को कभी भी नहीं भूलना चाहिए कार्यालय के बाहर भी उसका एक जीवन है वे घर पर किसी समस्या का सामना कर रहे हैं, जिसका असर उनके काम पर पड़ रहा है और आपको यह मालूम होना चाहिए कि एक मन से खुश अधिकारी ज्यादा प्रतिबद्ध होता है। अमेरिकन पत्रकार एवं लेखक जेफ्री जेम्स ने Inc.com में लिखा है 'आपके कर्मचारी निश्चित रूप से आपके पंचिंग बैग नहीं हैं।'

एक अच्छे बॉस को यह जान लेना चाहिए कि हर समस्या का समाधान नहीं हो सकता, हाँ हम बहुत हद तक उसको हल कर सकते हैं या कोई और पर्याय खोजते हैं और इसके लिए एक बेहतरीन टीम, एक जुझारू कार्मिक की जरूरत पड़ती है। इसलिए एक अच्छे बॉस की खूबी है कि आदेश देने के साथ-साथ कनिष्ठों को सुनना भी सीखें। उनके विचारों को तुरंत खारिज न करें, हो सकता है वो अपने अनुभव साझा करना चाहता हो जिसमें बेहतर सुझाव भी हों।

चलिए एक बेहतर बॉस के लिए बहुत से मापदंड देख लिए और चर्चा कर ली। अब सिक्के के दूसरे पहलू को भी जान लें। सहकर्मियों को अपने बॉस में ज्यादातर खलनायक क्यों नजर आता है? या यूं कहें कि बॉस क्यों कठोर निर्णय लेते हैं जो कि अधीनस्थों को नागवार गुजरते हैं। अगर हम उनकी जगह हों तो निश्चित तौर पर कुछ सच्ची बातें सामने आती हैं जिनकी ओर अधीन कार्मिकों का ध्यान नहीं जाता। बॉस वो ढाल है जो कि कार्यों को समय पर और सटीकता से निपटाने के उच्च अधिकारियों के दबाव को आपके ऊपर आने नहीं देता या उस दबाव की तीव्रता को कम कर देता है। बॉस को पता है कि उनकी टीम में सभी लोग कुशल नहीं हैं, कुछ ज्यादा है तो कुछ कम हैं या कुछ सिर्फ समय काट रहे हैं। वह प्रयास करता है कि कामचोर अधीनस्थों से सेवाएं कैसे लें और कार्यालय में उन कामचोरों के द्वारा अच्छे कार्मिकों के मध्य नकारात्मक माहौल न फैले।

बॉस तो नियोक्ता के रूप में आपके कौशल को परखता भी है, इसलिए वह समयबद्धता पर कार्य निपटाने पर जोर देता है।

सौ बात की एक बात यदि आपका बॉस आपको दबाव में काम पूरा करने की आदत डलवा रहा है तो वो भविष्य में आपके बॉस बनाने की राह प्रशस्त कर रहा है।

❖❖❖

# सीमाशुल्क मुंबई अंचल–II में

## -:सतर्कता जागरूकता अभियान 2023 का आयोजन:-

राजस्व विभाग के बड़े कार्यालयों में सीमाशुल्क मुंबई अंचल-II, जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा एक महत्वपूर्ण कार्यालय है। प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी मुंबई-II में सरकार द्वारा निर्धारित दिशानिर्देशों के अनुसार सतर्कता जागरूकता अभियान, 2023 का शुभारंभ किया गया। आयोजन का मुख्य उद्देश्य शासकीय कार्यों में सतर्कता को सर्वोपरि रखते हुए भ्रष्टाचार के खिलाफ अभियान चलाना है।

जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा में वित्तीय वर्ष 2023-24 हेतु दिनांक 30.10.2023 से 5.11.2023 की अवधि में सतर्कता जागरुकता सप्ताह का आयोजन किया गया। इस वर्ष का थीम था- ''भ्रष्टाचार का विरोध करें, राष्ट्र के प्रति समर्पित रहें''।

सतर्कता जागरुकता सप्ताह 2023 का शुभारंभ माननीय मुख्य आयुक्त महोदय के द्वारा दिनांक 30.10.2023 को सभी सदस्यों को सत्यनिष्ठा की शपथ दिला कर किया गया। सतर्कता और नैतिकता के महत्व को प्रभावी ढंग से संप्रेषित करने के उद्देश्य से बैनर एवं पोस्टर के माध्यम से ''भ्रष्टाचार का विरोध करें, राष्ट्र के प्रति समर्पित रहें'' के संदेश प्रसारित किया गया।

जागरूकता सप्ताह का आरंभ ''भ्रष्टाचार का विरोध करें, राष्ट्र के प्रति समर्पित रहें'' थीम को लेकर हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में निबंध प्रतियोगिता के आयोजन के साथ हुआ। जिसमें विजेता अधिकारियों को ट्रॉफी प्रदान की गई।

दिनांक 31.10.2023 को भ्रष्टाचार के खिलाफ जागरुकता का प्रसार करने और सतर्कता को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से जसखार ग्राम पंचायत में एक व्याख्यान का आयोजन किया गया।

जागरूकता सप्ताह के दौरान दिनांक 1.11.2023 को सतर्कता, शासकीय कार्यों में संवेदनशीलता पर सतर्कता महानिदेशालय, पश्चिम क्षेत्र, मुंबई के उप आयुक्त महोदय के द्वारा एक व्याख्यान आयोजित किया गया जिसमें कार्यशाला का भी आयोजन किया गया।

सतर्कता जागरुकता के व्यापक संदेश के साथ दिनांक 4.11.2023 को नेरुल, नवी मुंबई के 'ज्वेल ऑफ नवी मुंबई' पार्क में एक वॉकेथॉन का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य आयुक्त महोदय, सभी आयुक्तों, अपर/संयुक्त आयुक्तों ने भाग लिया जिसका उद्देश्य आम नागरिकों में सतर्कता का संदेश पहुंचाना था।

इस प्रकार के वार्षिक आयोजनों के माध्यम से हम सतर्कता, सत्यनिष्ठा और नैतिक आचरण को बढ़ावा देते हुए राष्ट्र की व्यापक उन्नति में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। ऐसे आयोजन ही एक न्यायसंगत और पारदर्शी प्रशासन व्यवस्था का निर्माण करते हैं।

# भ्रष्टाचार का विरोध करें, राष्ट्र के प्रति समर्पित रहें

**रामकुमार निषाद**
**निरीक्षक (निवारक) अधिकारी**

''भ्रष्टाचार एक ऐसी समस्या है, जो देश के नैतिक एवं समाजिक विकास में बाधा उत्पन्न करती है।''

भ्रष्टाचार के प्रभाव से लोगों के नैतिक मूल्यों का ह्रास होता है, व्यक्तिगत स्वार्थ में वृद्धि होती है तथा लोगों में देशहित की भावना का पतन होता है।

भ्रष्टाचार के कई कारण हो सकते हैं, जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं-

1. **पारदर्शिता की कमी** – सामाजिक संस्थानों, कार्यालयों, न्यायपालिका आदि में पारदर्शिता की कमी की वजह से भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है।
2. **लाल फीताशाही/नौकरशाही** – सरकारी सुविधाओं को जनसामान्य तक पहुँचने में बहुत ज्यादा समय का लगना, फाइलों का एक दफ्तर से दूसरे दफ्तर के बीच में पड़ी रह जाना भ्रष्टाचार को बढ़ावा देता है। जहां जनसामान्य को अपना काम सही समय पर करवाने के लिए मजबूरन रिश्वत देनी पड़ती है।
3. **राजनीतिक हस्तक्षेप** – प्रशासनिक मामलों में राजनीतिक हस्तक्षेप की वजह से सरकारी संस्थाओं को अपनी स्वायत्तता से समझौता करना पड़ता है तथा जानबूझकर, अनैतिक एवं गैरकानूनी कार्य

करने के लिए संस्थाओं पर राजनीतिक दबाव बनाया जाता है, जो कि भ्रष्टाचार के बढ़ने का एक कारक है।

4. **सामाजिक असमानता** – समाज में व्याप्त सामाजिक असमानता भ्रष्टाचार की वृद्धि में एक कारक है। क्योंकि धन, शक्ति एवं राजनीतिक प्रभुत्व वाले व्यक्ति अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए भ्रष्टाचार का सहारा लेते हैं। वहीं निर्धन एवं कमजोर व्यक्ति को अपने मूलभूत अधिकारों तक की सुरक्षा के लिए भ्रष्टाचार के आगे झुकना पड़ता है।
5. **सांस्कृतिक कारक** – सरकारी सस्थानों में यह धारणा कि 'हर कोई तो ऐसा करता है' भ्रष्टाचार को बढ़ावा देती है। इस भावना के प्रभाव में व्यक्ति अपने नैतिक मूल्यों एवं सामाजिक कर्तव्यों को भूल जाता है और अपने निजी स्वार्थ के लिए अपने ही लोगों का शोषण करता है।

**निजी क्षेत्र की तुलना में**

6. **वेतन की कमी** – सरकारी कर्मचारियों के वेतन में निजी क्षेत्र के वेतन की तुलना में अत्यधिक अन्तर, भ्रष्टाचार का कारक हो सकता है। कम वेतन वाले सरकारी कर्मचारी ऊपरी कमाई को अपनी आय का पूरक बनाने लगते हैं।

भ्रष्टाचार के इस व्यापक रूप से समाज के सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों पर गहरा प्रभाव पड़ता है, जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं-

1. **सेवाओं में गुणवत्ता की कमी** – भ्रष्टाचार की वजह से गुणवत्ता में भारी कमी होती है, जैसे की विनिर्माण के क्षेत्र में निम्न गुणवत्ता के पदार्थों का इस्तेमाल, सरकारी सुविधाओं का देर से पहुंचना, न्याय मिलने में देरी आदि।
2. **अधिकारियों की अवहेलना** – भ्रष्टाचार की वजह से लोगों में सरकारी अधिकारियों के प्रति विश्वास की कमी होती हैं, लोग उन्हें भ्रष्टाचारी के रूप में देखने लगते हैं, जिसके कारण ईमानदार अधिकारियों को भी सामाजिक अवहेलना का शिकार होना पड़ता है।
3. **सरकार के प्रति विश्वास की कमी** – वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समाज सरकारों का मूल्यांकन उसके अच्छे कार्यों से नहीं बल्कि उसके कार्यकाल में हुए भ्रष्टाचार के आधार पर करता है। कोई भी व्यक्ति एक भ्रष्टाचारी के आधार पर करता है। कोई भी व्यक्ति एक भ्रष्टाचारी सरकारी व्यवस्था नहीं चाहता। भ्रष्टाचार से लोगों को मन में सरकार के प्रति अविश्वास पैदा होता है।
4. **देश भक्ति की कमी** – भ्रष्टाचार के जंजाल में फंसकर व्यक्ति अपने मौलिक कर्तव्यों को भूलता जा रहा है। देश एवं समाज के प्रति जो उसका दायित्व बनता है, उसे वह अपने व्यक्तित्व स्वार्थ के अधीन करता आ रहा है, जिसके कारण लोगों में देश भक्ति की भावना की कमी हुई है।
5. **अर्थव्यवस्था पर प्रभाव** – कोई भी विदेशी निवेशक किसी भी देश में निवेश करने से पहले वह उस देश के भ्रष्टाचार सूचकांक को देखता है। क्योंकि निवेश के लिए उसे विभिन्न शासकीय स्तरों से गुजरना पड़ता है। जिस व्यवस्था में भ्रष्टाचार व्याप्त रहता है, उसमें विदेशी निवेश की कमी होती है।

भ्रष्टाचार एक ऐसी विपदा है, जो समाज के नैतिक मूल्यों का सर्वनाश कर देती है तथा आर्थिक एवं सामाजिक रूप से समाज में एक गहरी खाई का निर्माण करती है।

विकासशील देशों के लिए भ्रष्टाचार तो एक अभिशाप स्वरूप है, जो उनके विकसित होने की दिशा में प्रमुख बाधा के रूप में नजर आता है।

भ्रष्टाचार कहीं न कहीं आतंकवाद को भी प्रस्तावित करता है। एक स्वस्थ, समृद्ध एवं नैतिक रूप से मजबूत देश के निर्माण के लिए हमें भ्रष्टाचार मुक्त देश का निर्माण करना होगा। समाज में जागरूकता को बढ़ाकर तथा डिजिटल उन्नति के माध्यम से हम भ्रष्टाचार को कम कर सकते हैं।

भ्रष्टाचार मुक्त समाज में ही सामाजिक सद्भाव व्याप्त हो सकता है तथा सभी का एक विकास किया जा सकता है। हमें व्यवस्था के प्रत्येक स्तर पर भ्रष्टाचार को ना कहने का संकल्प लेना होगा। जिससे हम समृद्ध एवं विकसित भारत के सपने को संकल्पित कर सकेंगे।

❖❖❖

# जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस–2024 का आयोजन

*योग गुरु श्री शंभू शरण झा का स्वागत करते हुए माननीय प्रधान मुख्य आयुक्त महोदय*

# अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस एवं गरबा समारोह

जेएनसीएच न्हावा शेवा में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महिला अधिकारियों का सम्मान करते अधिकारीगण। बैठक में महिला अधिकारियों ने सरकारी काम-काज और जीवन में आने वाली चुनौतियों के बारे में संवाद किया।

गरबा समारोह

# उपलब्धियाँ

सीमाशुल्क मुंबई अंचल-II में सहायक आयुक्त के पद पर कार्यरत **श्री वेणुगोपाल अय्यर** ने बहुत से संगीत रीएलिटी शो में भाग लिया और विजेता बने। संगीत के माध्यम से आप नियमित रूप से चैरिटी शो करते हैं। आपके नाम मैराथन केरीओके गायन, डॉ. तात्या लहाने की बायोपिक पर बनी मराठी मूवी में रिले गायन और एक अन्य मैराथन गायन के लिए 04 गिनीज़ विश्व रिकार्ड दर्ज हैं। उन्होंने सामाजिक चेतना जगाने के उद्देश्य से किए गए बहुत से चैरिटी कार्यक्रम में भाग लिया।

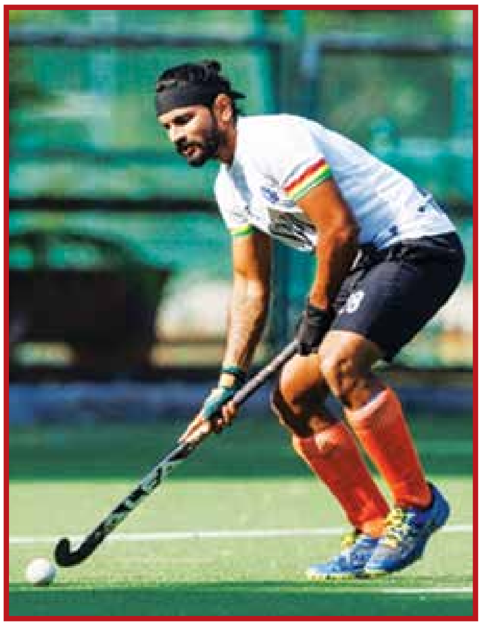

**श्री मुथन्ना बी.के.** ने वर्ष 2017 में "कर सहायक" के पद पर सीमाशुल्क विभाग में सेवा प्रारंभ की और वर्तमान में जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क मुंबई अंचल-II में कार्यरत हैं। वह देश के एक उदीयमान हॉकी खिलाड़ी हैं। आइए उनकी उपलब्धियों पर एक दृष्टि डालें :-

- **जूनियर नेशनल में :** मुंबई की टीम से भाग लिया (2007)
- **सीनियर नेशनल में :** मुंबई टीम से खेल (वर्ष 2010, 2014, 2016, 2020 चैंपियन)
- **अखिल भारतीय इन्टर यूनिवर्सिटी चॅम्पियनशिप :** मुंबई यूनिवर्सिटी की ओर से खेला (वर्ष 2011 चैंपियन)
- **जर्मन हॉकी लीग 2nd डिविशन :** टीम टी जी फरेंकेंनथॉल की ओर से खेला (वर्ष 2011)
- **हॉकी वर्ल्ड सीरीज :** चेन्नई चीतास की ओर से खेला (वर्ष 2012)
- **सीनियर नेशनल में :** महाराष्ट्र टीम की ओर से खेला (वर्ष 2013)
- **सीनियर नेशनल में :** केन्द्रीय सचिवालय की टीम में सीमाशुल्क ओर से खेला (वर्ष 2018, 2022)
- फेडरेशन ऑफ इंटरनेशनल हॉकी में कोचिंग का लेवल 2 पूरा किया
- **वर्तमान में :** महाराष्ट्र जूनियर हॉकी टीम के कोच हैं।

# मुंबई सीमाशुल्क की फुटबॉल टीम की उपलब्धियाँ

मुंबई सीमाशुल्क की फुटबॉल टीम ने 2023 में आयोजित अखिल भारतीय नासिक चैलेंजर्स कप जीता।

मुंबई सीमाशुल्क की फुटबॉल टीम आरसीएफ चेंबूर, मुंबई में आयोजित नाडकर्णी कप में भी उपविजेता रही।

मुंबई सीमाशुल्क की फुटबॉल टीम वर्ष 2021-22 में मुंबई फुटबॉल एसोसिएशन के एलीट डिवीजन में तीसरे स्थान पर रही।

मुंबई सीमाशुल्क की फुटबॉल टीम ने वर्ष 2019-20 और 2020-21 में मुंबई फुटबॉल एसोसिएशन का एलीट डिवीजन जीतने में सफल रही ।

नज़्म

**मोहम्मद शादाब**
निरीक्षक (निवारक) अधिकारी

# गुज़रे लम्हों की गूंज

ये पुराने वादों की बातें हैं,
जब दिल की धड़कनें बेकरार थीं,
जब आँखों में हसरतों की चमक थी,
जब दिलों की धड़कनें मिलती थीं,
सपनों की सहर लुटाते थे।

जब सांसों में ताजगी की बहार थी,
जब चाँद की किरणे दिल में उतरती थीं,
जब नज़दीकियों में मीठी बातें होती थीं,
हर पल एक अनकही क़स्म होती थी,
जैसे क़िस्मत की क़लम से लिखी गई हो।

अब हमारे लम्हें बुझे हुए हैं,
काले बादलों की तरह गहरे,
हमारी आँखों में सर्द धुंध है,
हमारे होंठों पर फीके अल्फाज़ हैं,
जिनसे जलते-बुझते अहसास दिखते हैं।

अब, वीराँ हो गए आँगन,
जहाँ सुबह की चाँदी और शामों का सोना
सिर्फ़ यादों की धूल में खो गया है,
जितनी चमक पहले थी,
अब वो सब राख हो चुकी है।

अब ये बातें पुरानी हैं,
जिन्हें वक्त के धुंधले पर्दे में छुपा दिया गया है,
जिस उम्र में ख़्वाब हकीकत बनते थे,
अब उसकी यादें गुमनाम हो चुकी हैं,
सिर्फ़ गुज़रे लम्हों की गूंज है।

अब, हमें अपनी आँखों में
पुरानी रातों की चाँदनी नज़र आती है,
वो उम्र अब बीत चुकी है,
हमारी दीद के रास्ते में
बस कुछ रंग, कुछ पुरानी यादें हैं,
कुछ भुला दिए चेहरों की झलक है।

ये पुराने वादों की बातें हैं,
जो अब सिर्फ़ एक याद की तरह बसी हैं,
वो समय था जब हर लम्हा जीने लायक था,
अब वो सब गुज़रे लम्हों की गूंज में खो गया है।

# कविता

श्रेया आर. सक्सेना, कक्षा-X
(सुपुत्री श्री रूपेश एस. सक्सेना)

## मेरा गाँव कुछ कहता है

मेरा गाँव कुछ कहता है,
होली के रंग,
दिवाली की रोशनी,
ईद की उमंग,
मिट्टी की खुशबू भीनी।

दादा-दादी का प्यार,
व्यंजनों की बहार
गाँव में सब कुछ दिखता है,
मेरा गाँव कुछ कहता है।

गाँव में तारे दिखते हैं,
हवा में फूल महकते हैं,
पड़ोसियों से दिल मिलते हैं,
दर्द को साझा करते हैं।

दिलों का दरवाज़ा खुला रहता है,
मेरा गाँव कुछ कहता है।

❖❖❖

लक्ष्मी कुमारी
अधीक्षक, सीमाशुल्क

## बावरी

तुझसे मिलने की ना खबर आई
हो गई मैं तो बाबरी पिया!

अब की दुपहरी हुई ऐसी
चेहरे की रौनक जाती रही
तेरी याद में पल पल तपती रही
आकर कर दे थोड़ी छाँव रे पिया!

अबकी बारिश ऐसी बरसी
बह गया नयनों का काजल
देर ना कर जा, अब आ भी जा
मैं हूँ तेरी सांवरी पिया!

मेंहदी भी फीकी हुई अब तो
कुछ ही दिन बाकी सावन के
जुदाई में ये रुत ना गुजर जाए
आ जा अपने गाँव रे पिया

तुझसे मिलने की ना खबर आई
हो गई मैं तो बावरी पिया!

❖❖❖

# जज़्बा और जज़्बात

**निखिल गुप्ता**
**कार्यकारी सहायक**

जाने या अनजाने में, हमारे समाज में, हमारे आसपास, Failure को एक शब्द नहीं बल्कि एक अस्पृश्य वर्ग की तरह माना जाता है। लोग टॉपर्स की कामयाबी में इतने मग्न हो जाते हैं कि उनको fail छात्र की मनोदशा से कोई मतलब ही नहीं होता। सब जगह टॉपर्स के चर्चे वाहवाहियां और 75 तरह के सेलिब्रेशन ही दिखाई पड़ता है।

पर मेरे प्यारे दोस्तों, फेलियर का भी लाइफ में अपना बहुत बड़ा महत्व है। यह आपको जीना सिखाता है, फेल होने के बाद इंसान खुद को कैसे समेटता है और फिर से दूसरे दिन जिंदगी की जद्दोजहद में लग जाता है, यह भी एक बहुत बड़ा लाइफ लेसन ही है।

टॉप करना या पास करना अच्छी बात है, 100 प्लानिंग्स होते है पास होने के बाद क्या करना है। पर कोई फेल होने के बाद क्या करना है इसकी प्लानिंग नहीं करता, जबकि 99.9% लोगों को कॉम्पिटिशन परीक्षा में फेल होना ही है।

अपने फेलियर को भी सेलिब्रेट करना सीखना चाहिए और चाहिए क्या सीखना पड़ेगा। जिंदगी के 1000 खेल हैं आप सब में पास नहीं हो सकते आपको फेल भी होना पड़ता है, ऐसा दुनिया में कोई इंसान नहीं जो कभी फेल नहीं हुआ हो। पर, इस failure होने से जो पाठ सीखने को मिलता है, वो बहुत जरूरी है, उस पाठ को व्यर्थ ना जाने दें, वरना फेलियर वापस आएगा, तब तक वापस आएगा जब तक आप उसकी सीख, सीख नहीं लेते।

फेल होने से घबराना नहीं है, सीखना है अपनी कमियों को, समझना है बाकी 1000 और रास्तों के बारे में, 100 बार गिरना है तो 100 बार उठना है, बस हार नहीं मानना है, खुद को कभी भी किसी से कम या छोटा नहीं समझना मेरे दोस्तों, और सबसे इम्पोर्टेन्ट खुद को किसी से कभी बड़ा भी मत समझना..!!

# ग़ज़ल

**मुकेश कुमार मिश्रा**
**सीमाशुल्क अधीक्षक**

(1)

किस लिए मुझको इतना सताते हो तुम
क्यूँ नही मुझको दिल में बसाते हो तुम

अपनी चाहत से तुमने जलाया जिन्हें
उन चराग़ों को अब क्यूँ बुझाते हो तुम

नींद आँखों से मेरी रवाना हुई
सज के ख़्वाबों में रातों को आते हो तुम

ज़िक्र उल्फ़त का है मेरे मिसरों में अब
इस क़दर मेरी नज़्में सजाते हो तुम

तुम जो आये हुई, खुशनुमा ज़िंदगी
दर्द में मुझको बरबस हँसाते हो तुम

❖❃❖

(2)

मोहब्बत और खुशियों का ज़माना याद आता है
मुझे मिट्टी का अपना घर पुराना याद आता है

नही आती है मुझको नींद जब रातों में ऐ यारो
वो माँ का प्यार से लोरी सुनाना याद आता है

सताती है मुझे ये शहर की वीरानियाँ जब भी
मुझे तब पेड़ पीपल का पुराना याद आता है

मुझे जब घेर लेते हैं हज़ारो रंज दुनिया के
पुराने दोस्तों का गुदगुदाना याद आता है

कभी मैं लड़खड़ाता हूँ या जब मायूस होता हूँ
बुजुर्गों का मेरी हिम्मत बढ़ाना याद आता है

लिखी शायद मुक़द्दर में मेरे परदेश की रोटी
मग़र चूल्हा वो आँगन में जलाना याद आता है

सुनाती थी हमें दादी राजाओं और परियों की
कहानी और किस्सों का खज़ाना याद आता है

❖❃❖

# मातृभाषा हिन्दी

**संगीता अधिकारी**
**सहायक आयुक्त, सीमाशुल्क**

हिन्दी - वैसे तो, ये देश की राष्ट्र भाषा है और हम सबकी मातृभाषा है परंतु आज यह भाषा अपनी ही बुनियाद की रक्षा में लगी है। यह वही भाषा है, जिसने इस सोते हुए राष्ट्र को दासता की नींद से जगाया है। इसी भाषा ने भारत को स्वतंत्रता का अर्थ समझाया है। यही वह भाषा है, जो ऐतिहासिक स्वतंत्रता के संघर्ष की साक्षी बनी है। 'भारत दुर्दशा' जैसे निबंध लिखकर इस देश को जगाने वाले महान साहित्यकार श्री भारतेंदु हरीशचंद्र ने मातृभाषा का महत्व कुछ इस प्रकार समझाया हैः-

*निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।*
*बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिट तन हिय को शूल।।*
*अंग्रेजी पढिके जदपि, सब गुण होत प्रबीन।*
*पै निज भाषा ज्ञान के रहत हीन के हीन।।*
*विविध कला, शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार।*
*सब देसन से लै करहु निज भाषा माँहीं प्रचार।।*

हिन्दी हमारे सम्मान स्वाभीमान और गर्व की भाषा है और विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में से तीसरे नंबर पर है। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अनुरोध पर सन् 1953 से संपूर्ण भारत में 14 सितम्बर को 'हिन्दी दिवस' के रूप में मनाया जाने लगा ।

मातृभाषा न केवल व्यक्ति के विचारों और अभिव्यक्ति का माध्यम होती है बल्कि यह अपने सामाजिक और सांस्कृतिक संबंधों का भी निर्माण करता है और स्वायित्व देती है। हम इसी के द्वारा सभी संस्कार और व्यवहार पाते हैं। अपनी मातृभाषा से जुड़कर ही व्यक्ति अपनी धरोहर से जुड़ता है और उसे आगे बढ़ाने का प्रयास करता है। हिन्दी का सम्मान देश का सम्मान है। हमारी स्वतंत्रता वहां है, हमारी राष्ट्रभाषा जहां है।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए लंबी लड़ाई लड़ चुके व्यौहार राजेन्द्र सिंह का 50वाँ जन्म दिन 14 सितम्बर 1949 को था इसी दिन हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकार किया गया। उन्होंने इसे राष्ट्रभाषा स्थापित करने के लिए काका मैथली शरण गुप्त, श्री कालेलकर, श्री हजारीप्रसाद द्विवेदी, सेठ गोविंददास जैसे कई साहित्यकारों के साथ भरपूर प्रयास किया था।

विविधताओं से भरे इस देश में
लगी भाषाओं की फुलवारी है,
इनमें हमको सबसे प्यारी, हिन्दी मातृभाषा हमारी है।
हिन्दी जनसंचार का स्पंदन है,
हिन्दी भारत माँ का वंदन है।
हिन्दी सरल है, सुबोध है,
हिन्दी एक सुंदर अभिव्यक्ति है।
हिन्दी ही सभ्यता है, हिन्दी ही संस्कृति है।
हिन्दी मधुर-मधुरतम भाव है,
हिन्दी ही हमारा स्वभाव है।
हिन्दी विराट वृक्ष की मीठी सघन छाँव है।
हिन्दी ही है जन जन की धड़कन।

देश तथा जाति का उपकार उसके बालक तभी कर सकते हैं जब उन्हें उनकी भाषा द्वारा शिक्षा मिली हो।

**- पं. गिरधर शर्मा**

हिन्दी जैसी सरल भाषा दूसरी नहीं है- **मौलाना हसरत मोहानी**

हिन्दी के विरोध का कोई भी आंदोलन राष्ट्र की प्रगति में बाधक है- **सुभाष चंद्र बोस**

❖❖❖

# तुम लक्ष्य की तलाश हो

**धनन्जय मौर्य**
**अधीक्षक, सीमाशुल्क**

न आस हो, न प्यास हो, न जिन्दगी का भास हो
तू हार से निराश हो, या डर से तुम उदास हो
जो रोम-रोम सिंहर उठे, उस भय का तुम विकास हो
जो सारे अच्छे रास्ते हो, बंद तेरे वास्ते,
कदम-कदम पे चाल हो, जो बंदिशे मिसाल हो
समाज की हो बेड़ियाँ, या पैसों से मोहाल हो
जमाने की जो साजिशें, लहू से तेरे लाल हो
या रास्तों में खाइयों की, पड़ रही जो जाल हो
नहीं कोई जवाब हो, सवाल ही सवाल हो
उम्मीद की किरण से तब, जो आ रही हो रोशनी
बता रही, बता रही, अन्धेरों को हरा रही
तलाश हो-तलाश हो, तुम लक्ष्य की तलाश हो
नदी तेरी, पवन तेरा, धरा तेरी, गगन तेरा
है तुझको क्या, कमी बता, ये सारा है चमन तेरा
देखो जहाँ, ये साथ हैं, तुझपे प्रभु का हाथ है
जो लक्ष्य को तू भेदना, बस एक ही छलांग है
है लक्ष्य तेरी प्रेमिका, है लक्ष्य तेरी सेविका
बैठी है, बेकरार है, बस तेरा इन्तजार है।

❖❖❖

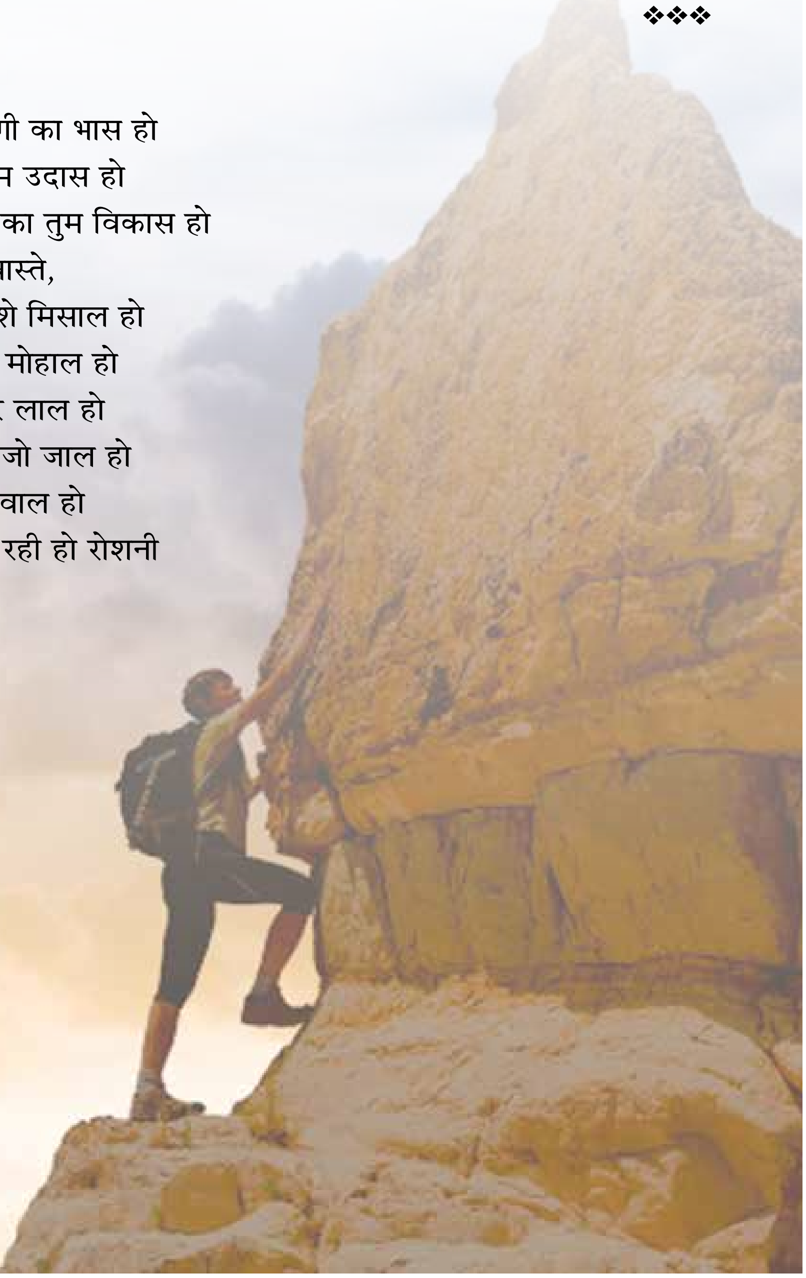

## काव्यधारा

**प्रद्युम्न मैथिल**
**निरीक्षक (निवारक अधिकारी)**

### तुम बन जाओ सीते

तुम बन जाओ सीते मेरी
और मैं बन जाऊं कलियुग का राम

समय नहीं है, जो था उस युग में
जहां वचन निभाय जाते थे
राजधर्म की लज्जा हेतु
प्रियों की बलि चढ़ाते थे।।

राजधर्म और मर्यादा ने
जाने क्या क्या विघ्न बनाए हैं
कहीं हुई अग्निपरीक्षा
कहीं अपनों पर बाण चलाए हैं।।

पर वर्तमान ऐसा न होगा
ना देना होगा स्वयं का दान
अब तुम बनजाओ सीते मेरी
और मैं बन जाऊं कलयुग का राम।।

### आरंभ हुआ हर कार्य

आरंभ हुआ हर कार्य
अंततः अपने पड़ाव से परिचित हो जाता है
बस समय ही चिर अमर अजय है
वह था है और रहेगा

हम बस समय रेखा की एक बिंदु हैं
जो अशक्त है और अष्पष्ट भी
हम जो चाहते है वही देखते हैं
और जिससे अंजान हैं वही सत्य है।

सत्य यहां एक अंत को दर्शा रहा है
वही अंत जो कड़वा है पर अपरिहार्य है
वह कुण्डली मार प्रतीक्षा में है
या भुजाएं खोले अभिवादन कर रहा है।

फिर क्या हम स्वीकार कर लें
की हम एक कल्पना को सच मान बैठे हैं
कल्पना, जिसको हम जीवन कहते हैं
या वह कल्पना जो प्रारंभ ही न हुई हो।

अंततः आप सूक्ष्म चक्रयूह में फसता पाओगे
जिसको भेदना वाला बौद्ध कहलाया
वही बौद्ध जिसको ज्ञात हो चुका था
की अंत ही आरंभ है।

आरंभ यहां उस इस्थती को बता रहा है
जो मानव अंत के परे है
जहां आप शिव बन जाते हो
वह शिव जिसका न अंत है
न आकार वाह शिव
जहां अंत का भी अंत होता है।

❖❖❖

# नशा मुक्त भारत अभियान

जेएनसीएच में दिनांक 12.06.2024 से 26.06.2024 तक नशीली दवाओं के दुरुपयोग के खिलाफ "नशा मुक्त भारत पखवाड़ा" मनाया गया, जिसके अंतर्गत कार्यालय द्वारा आर.के. फाउंडेशन, जेएनपी विद्यालय, शेवा के छात्रों के मध्य दिनांक 25.06.2024 प्रातः 11:00 बजे से नशीली दवाओं के विरोध में "जागरूकता कार्यक्रम" आयोजित किया गया। कार्यक्रम में छात्रों को नशीली दवाओं के दुरुपयोग के बारे में जागरूक किया गया।

नशा मुक्त भारत पखवाड़ा के दौरान सीमाशुल्क अधिकारी बच्चों का मार्गदर्शन करते हुए।

जे. एन. पी. विद्यालय, शेवा के छात्र एवं छात्राएँ के द्वारा 'नशा मुक्ति भारत पखवाड़ा' मनाते हुए

सीमाशुल्क अधिकारियों के साथ एक रैली का आयोजन किया।

# नशा मुक्त भारत अभियान

पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार दिए गए और जे. एन. पी. विद्यालय की प्रधानाध्यापिका महोदय को आभार व्यक्त किया गया।

नशीली दवाओं के दुरुपयोग के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय दिवस मनाने के अवसर पर कार्यालय ने जागरूकता फैलाने के लिए 26.06.2024 को प्रातः 10:00 बजे एक साइकिल रैली का आयोजन किया। इस आयोजन में प्रधान मुख्य आयुक्त सहित अन्य अधिकारियों ने भाग लिया, जो जेएनपीटी टाउनशिप के मार्ग से होते हुए जेएनसीएच भवन परिसर में समाप्त हुआ।

# स्वच्छता पखवाड़ा

जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन में स्वच्छता ही सेवा (SHS) अभियान 15 सितंबर से 2 अक्टूबर 2023 तक मनाया गया। एसएचएस 2023 का उद्देश्य सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से जन आंदोलन पैदा करना और "स्वच्छ भारत मिशन" (एसबीएम) के कार्यान्वयन को गति प्रदान करना है। 22.09.2023 को स्वच्छता प्रतिज्ञा ली गई और जेएनसीएच परिसर के आस पास स्वच्छता अभियान चलाया गया।

# एलीफेंटा गुफाओं में स्वच्छता अभियान करते हुए न्हावा शेवा के अधिकारी

स्वच्छता पखवाड़ा अभियान 2023 के तहत प्रधान मुख्य आयुक्त सहित बोर्ड के अन्य उच्च अधिकारियों के द्वारा एलीफेंटा गुफाओं में स्वच्छता अभियान किया गया।

# पुरस्कार- एक संस्मरण

रुचि मिश्रा
**कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी**

मैं उस दिन कक्षा 3 में हिंदी पढ़ा रही थी। मनीष भइया जो हमारे स्कूल के ही कर्मचारी थे, वह बच्चों की कुछ कॉपियों को मांगने मेरी कक्षा के दौरान आए। मैं पढ़ा ही रही थी तभी उन्होंने मुझे बीच में मेरी ही इजाज़त से रोकते हुए कहा, "प्लीज, ऑल ऑफ यू, सबमिट योर कॉपी फॉर मैथ्स। डायरेक्टर मैम आस्किंग।"

मुझे उनके कहे ये शब्द आज भी बड़े अच्छे से याद हैं।

क्योंकि मैं अभी उस जगह पर नई थी तो उनका नाम नही जानती थी लेकिन एक चौथी श्रेणी का व्यक्ति बच्चों से अंग्रेज़ी में बात करने की कोशिश कर रहा है ये मेरे लिए बड़े आश्चर्य की बात थी।

एक अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालय में अंग्रेज़ी बोलने को हमेशा प्राथमिकता दी जाती है और वहाँ के विशिष्टजन और अध्यापकगण हमेशा इस दबाव में होते हैं कि उन्हें अंग्रेजी में ही बात करना है।

ऐसे में उनसे नीचे की श्रेणी का व्यक्ति यदि इस नियम को बिना सुझाव के स्वेच्छा से पालन कर रहा है तो इससे बड़ा कर्तव्यपालन क्या ही होगा!

मैंने यह कई बार ध्यान दिया कि वह अपनी टूटी-फूटी अंग्रेज़ी में ही सही लेकिन बच्चों से उसी भाषा में बात करने की कोशिश करते हैं।

क्योंकि मैं नई थी तो कुछ बोल नहीं पाई लेकिन मेरा मन कई बार करता था कि मैं मनीष भइया को उनके इस प्रयास की सराहना एवं बधाई ज़रूर दूँ।

ख़ैर, वक्त बीतता चला गया और मैं भी नए स्कूल में पुरानी होती चली गई, वहां के तौर तरीकों को समझती गई।

मेरा काम अच्छा था इसलिए मुझे कई बड़ी जिम्मेदारियाँ भी दी गईं। इसी क्रम में मुझे एक बार फरवरी-मार्च 2023 में एक कार्यक्रम संचालन और संयोजन की जिम्मेदारी दी गई।

सबके सहयोग और मेरे प्रयास से वह कार्यक्रम बहुत सफल रहा।

कार्यक्रम के अंत में कुछ लोगों को उनके अच्छे कार्य हेतु पुरस्कृत किया जाना था, जिनमें कुछ अध्यापक और अध्यापिकाएँ भी थीं।

हालांकि यह सिर्फ टीचिंग स्टाफ के लिए ही था। कार्यक्रम के एक दिन पहले ना जाने मेरे दिमाग में क्या आया और मैंने अपने प्रबंध निदेशक महोदय को मनीष भइया के प्रयास के बारे में बताया। मैंने उनसे अनुरोध करते हुए कहा कि उनके इस सराहनीय प्रयास के लिए पुरस्कार अवश्य मिलना चाहिए।

महोदय को मेरी बात पसंद आई और उन्होंने मुझसे कहा कि आप उन्हें पुरस्कृत जरूर कराएँ।

मैं मन ही मन बहुत खुश थी। मैं चाहती थी कि मनीष भइया को अचानक से यह पता चले। मैं

उनके चेहरे की खुशी देखना चाहती थी।

दूसरे दिन कार्यक्रम का आयोजन होना था। मैं बहुत प्रसन्न थी। लेकिन एक दिक्कत यह हुई कि उस दिन मनीष भइया छुट्टी पर थे। हालांकि पुरस्कार की घोषणा मैंने कर दी और पुरस्कार देने की वजह भी बता दी। सभी लोगों ने मेरे इस कार्य की बड़ी सराहना की।

दूसरे दिन जब मनीष भइया स्कूल आए तो उनसे मिलने वाला हर टीचर उन्हें बधाई देने लगा। पहले तो मनीष भइया को समझ ही नही आया कि लोग उन्हें क्यों बधाई दे रहे हैं और उन्हें यह पुरस्कार क्यों मिला है?

बाद में उन्हें पता चला तो उनकी खुशी का ठिकाना ही ना रहा। वो भी यह सोच ना सके थे कि कोई उन्हें ऐसे देख और परख रहा है।

उसी दिन ऐसे ही चलते चलते तीसरी मंजिल पर मेरी मुलाकात अचानक मनीष भइया से हुई। भइया अचानक मेरे पैर छूने को हो आए। यकायक यह देखकर मुझे कुछ समझ नही आया।

मैंने उनके हाथ रोक लिए और कहा, "भइया आप यह क्या कर रहे हैं ? प्लीज, पैर मत छुइए।"

वो दोनों हाथ जोड़े मेरे सामने खड़े हो गए और बहुत ही नम्र शब्दों में कहा "मैम, जितनी बधाई मुझे आज मिल रही है उतनी कभी नही मिली। आज मेरे लिए एक जीत का दिन लग रहा है। हर लोग मेरी पीठ थपथपा रहे हैं। और मैम, मुझे पुरस्कार भी मिला है, मुझे पता चला। मैम, माफ़ कीजिएगा मैं कल आ नही सका। मुझे मालूम नही था, नहीं तो मैं छुट्टी ही ना लेता।"

मैं बस मनीष भइया के चेहरे और मन के भावों को पढ़ रही थी।

मुझे जितनी संतुष्टि अपने काम से तब मिली शायद किसी और दिन मैं इतना संतुष्ट हो सकी। मुझे पहली बार लगा कि मैंने आज जीवन में एक नेक काम किया है। एक व्यक्ति को, उसके काम को पहचान दी है।

सही मायनों में भइया उन सभी के लिए एक उदाहरण थे जो बस नियमों में बंध जाते हैं लेकिन पालन नही करते। वह बिना नियम में बंधे भी सिर्फ़ जानकारी होने मात्र से ही उसका पालन करने की पूरी कोशिश कर रहे थे।

मनीष भइया वैसे तो बहुत व्यवहारिक थे लेकिन उस दिन के बाद से वह मेरा विशेष तौर पर ख्याल रखते थे। कभी कॉपी एक मंज़िल से दूसरी मंज़िल ले जाना हो, या कभी कोई काम हो; वह तुरंत मेरे बिना कहे करते थे।

बाकी लोगों का तो मुझे नही पता लेकिन वह जब भी मुझे देखते थे तो हाथ जोड़कर ही "गुड मॉर्निंग मैम" बोला करते थे।

मैंने उनकी आँखों में जो अपने लिए एक सम्मान देखा वह मेरे लिए सबसे बड़ी जीत थी, सबसे बड़ा पुरस्कार था।

मैंने सिर्फ़ उनके काम को पहचाना था, एक छोटा सा सम्मान दिया था, जिसके वह पात्र थे लेकिन मनीष भइया ने जो मुझे सम्मान और आदर दिया वह अविश्वसनीय था। मैंने इसकी उम्मीद की ही नही थी।

एक बार मैं कुछ 10-15 किताबें लेकर जा रही थी। मुझे थोड़ी दिक्कत हो रही थी क्योंकि मेरे हाथ में कुछ और सामान भी थे।

तभी मनीष भइया ने मुझे देख लिया। वह वहीं से दौड़े आए और कहा "मैम, लाइए दीजिए। मैं पहुँचा देता हूँ। आप क्यों ढो रही हैं?"

मैंने कहा "नहीं भइया ठीक है। स्कूल में आप लोगों से यह सब काम लेने की मनाही है। मैं कर लूँगी।"

भइया ने कहा, "अरे नही मैम! आप मेरे लिए लक्ष्मी हैं। आपकी वजह से आज मैं इतना सम्मानित महसूस करता हूँ। बहुत लोग आए और गए। मैं यहाँ कई वर्षों से हूँ लेकिन कभी किसी ने मुझमें यह देखा ही नही। आपने देखा, आपने पहचाना।"

मैं इसके आगे कुछ बोल ही नही पाई। सिर्फ महसूस कर रही थी कि असल में यह मेरा 'पुरस्कार' था।

❖❖❖

# विजेता निबंध

**रवि यादव**
**आशुलिपिक ग्रेड-I**

## कार्यालय में ई-ऑफिस का प्रयोग

भारत में राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र (एन. आई.सी.) द्वारा विकसित की गई ई-ऑफिस प्रणाली डिजिटल इंडिया कार्यक्रम का एक अभिन्न अंग है। इसका उद्देश्य सरकारी कार्यालयों को पारंपरिक कागज आधारित कार्यालय प्रक्रियाओं से आधुनिक, डिजिटलीकरण और कागज रहित प्रणाली में परिवर्तित करके एक सरल, उत्तरदायी प्रणाली जवाबदेह और पारदर्शी कामकाज हासिल करना है।

**भारत में ई-ऑफिस प्रणाली के उद्देश्य :-**

**उन्नत दक्षता :-** ई-ऑफिस प्रणाली का उद्देश्य सरकारी प्रक्रियाओं और निर्णय लेने की क्षमता और गुणवत्ता में सुधार करना है। उदाहरण के लिए ई-ऑफिस प्रणाली ने संस्थाओं के प्रतिनिधियों द्वारा भरी गई बिल ऑफ इन्ट्रीज को तेजी से और अधिक सटीकता से संसाधित करने में सक्षम बनाता है।

**कागज रहित शासन :-** ई-ऑफिस प्रणाली के उपयोग को उल्लेखनीय रूप से कम करके एक स्थायी। सतत् वातावरण में योगदान करती है। ई-ऑफिस प्रणाली को अपनाने से प्रति वर्ष कई टन कागज की बचत होती है।

**सुरक्षित वातावरण :-** ई-ऑफिस प्रणाली डिजिटल उपायों के माध्यम से संवेदनशील डेटा की सुरक्षा करती है। उदाहरण के लिए ई-ऑफिस प्रणाली डेटा सुरक्षा और अखंडता सुनिश्चित करने के लिए एन्क्रिप्शन, डिजिटल हस्ताक्षर और बायोमैट्रिक प्रमाणीकरण का उपयोग करती है।

**पारदर्शिता और जवाबदेही :-** ई-ऑफिस प्रणाली सरकारी कामकाज को अधिक पारदर्शी और अधिकारियों को अधिक जवाबदेह बनाने का भी प्रयत्न करती है। उदाहरण के लिए ई-ऑफिस प्रणाली में जनता को आरटीआई ऑनलाईन पोर्टल के माध्यम से विभिन्न योजनाओं और परियोजनाओं पर जानकारी प्राप्त करने की अनुमति दी है।

**ई-ऑफिस प्रणाली की मुख्य विशेषता :-**

**फाइल प्रबंधन प्रणाली :-** यह सुविधा संस्थाओं और विभागों को इलेक्ट्रॉनिक फाइलें बनाने और प्रवांधित करने में सक्षम बनाती है। जिसमें सूचना का निर्बाध प्रवाह सुनिश्चित होता है। उदाहरण के लिए ई-ऑफिस, ई. फाइल सुविधा में प्रशासनिक सुधार और लोक शिकायत विभाग की लाखों शिकायतों को ऑनलाईन संभालने में मदद की है।

**कार्मिक सूचना प्रबंधन प्रणाली (PIMS):-**

यह सुविधा कुशल मानव संसाधन प्रबंधन करती है। उदाहरण के लिए PIMS सुविधा ने सरकारी कर्मचारियों के प्रदर्शन मूल्यांकन और पदोन्नति की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित कर दिया है।

**पारदर्शित :-**

**वास्तविक समय में ट्रैकिंग :-** हितधारक वास्तविक समय में फाइलों और दस्तावेजों को ट्रैक कर सकते हैं। वर्तमान स्थिति और जिन अधिकारियों के माध्यम से यह हुआ है, उन्हें समझ सकते हैं। उदाहरण के लिए ई-ऑफिस पोर्टल उपयोगकर्ताओं को अपनी फाइलों और दस्तावेजों की स्थिति ऑनलाईन देखने की अनुमति देता है।

**सुलभ डेटा :-**

सार्वजनिक डेटा अधिक सुलभ हो जाता हैं, जिससे नागरिकों के बीच विश्वास बढ़ता है। उदाहरण के लिए भारत का राष्ट्रीय डेटा पोर्टल विभिन्न सरकारी विभागों और एजेंसियों के डेटा को साझा करने और उन तक पहुँचने के लिए एक मंच प्रदान करता है।

**क्षमता :-**

**स्वीकृत प्लेटफॉर्म :-** एक केन्द्रीकृत प्रणाली न्यूनतम अतिरेक सुनिश्चित करती है और संसाधन उपयोग को अधिकतम बनाती है। उदाहरण के लिए ई. ऑफिस में विभिन्न एप्लीकेशन जैसे ई-फाइल, के.एम. एम., .वी.आई.एम.एम. और टूर मैनेजमेंट सिस्टम को एक ही प्लेटफॉर्म में स्वीकृत किया है।

**त्वरित संचार :-**

सी.ए.एम.एम. के साथ संचार बाधाएँ टूट जाती है, जिससे तेजी से निर्णय लेना सुनिश्चित होता है। उदाहरण के लिए CAMS ने रक्षा मंत्रालय को चीन के साथ सीमा गतिरोध के दौरान विभिन्न हितधारकों के साथ वीडियों कॉन्फ्रेसिंग करने में सक्षम बनाया है।

**उत्पादकता :-**

**रिमोट एक्सेस :-** अधिकारियों को कहीं से भी फाइलों तक पहुँचने में सक्षम बनाता है, जिससे स्थान की परवाह किए बिना काम की निरंतरता सुनिश्चित होती है। उदाहरण के लिए ई-ऑफिस ने वर्क फ्रॉम एनिव्हेयर पोर्टल का समर्थन किया है। जो अधिकारियों को उनके लैपटॉप या मोबाइल उपकरणों का उपयोग करके दूर से काम करने की अनुमति देता है।

**बेहतर निगरानी :-**

ई-ऑफिस प्रणाली किसी भी समय, कहीं की सरकारी फाइलों और सूचनाओं तक पहुँच को सुनिश्चित करती है। उदाहरण के लिए ई-ऑफिस प्रणाली ने कार्यालय प्रमुख को किसी भी समय किसी भी फाइल की स्थिति की निगरानी करने में सक्षम बनाता है।

ई-ऑफिस प्रणाली आधुनिक, कुशल और टिकाऊ शासन की दिशा में भारत की यात्रा में एक महत्वपूर्ण प्रगति का प्रतीक है। औद्योगिकी का प्रयोग करके प्रणाली न केवल प्रतिकात्मक दक्षता लाती है बल्कि पारदर्शी और जवाबदेह प्रशासन का मार्ग भी प्रशस्त करती है, जिससे सरकार तथा उनके नागरिकों के बीच गहरा विश्वास पैदा होता है।

❖❖❖

# बच्चों का कोना

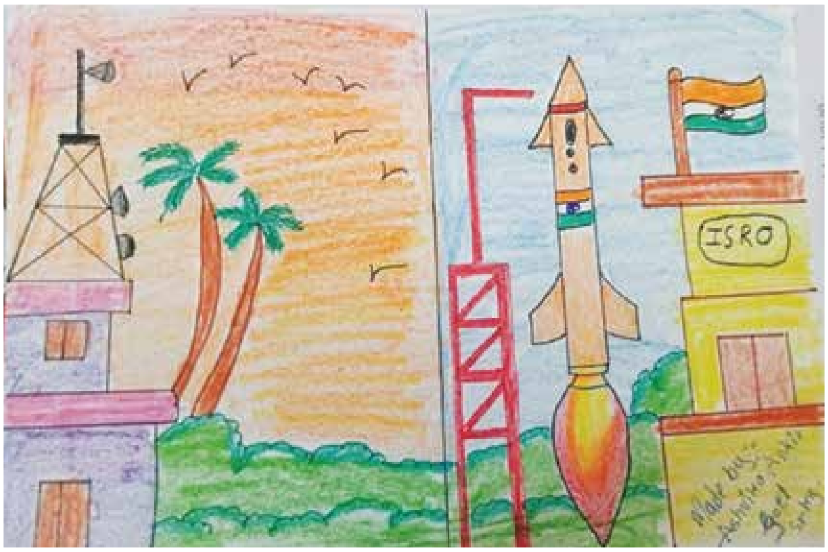

अश्विका अंकित गोयल,
सुपुत्री श्री अंकित गोयल,
कर सहायक

ऐषानी मिश्रा,
सुपुत्री श्री मुकेश कुमार मिश्रा,
सीमाशुल्क अधीक्षक

ब्लेक डी'सूजा,
सुपुत्र श्री एल्डन डी'सूजा,
अधीक्षक

अन्वी एन. कांबले,
सुपुत्री श्रीमती प्रियंका कांबले,
कर सहायक

सृष्टि तिवारी
सुपुत्री श्री सुजीत तिवारी,
अधीक्षक

अबीर गौतम,
सुपुत्र श्री विक्रम गौतम,
अधीक्षक

**सीमाशुल्क मुंबई अंचल - II,**
**जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा,**
**तालुका - उरण, जिला - रायगड, महाराष्ट्र - 400 707**

मुद्रण : आर.के.पब्लिकेशन, मुम्बई Mo. : 9821251190 E-mail : publicationrk@gmail.com